गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 189
दि. 10.11.2025,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

गुजरात में बड़ा आतंकी मंसूबा नाकाम, गांधीनगर में एटीएस की जबरदस्त कार्रवाई से बची तबाही

(जीएनएस)। गुजरात की धरती पर दहशत फैलाने की एक बड़ी साजिश को राज्य की सुरक्षा एजेंसियों ने समय रहते नाकाम कर दिया। गांधीनगर के अडालज टोल प्लाज़ा के पास, शनिवार की देर रात एक ऐसी कार्रवाई हुई जिसने पूरे सुरक्षा तंत्र को चौकन्ना कर दिया। राज्य एटीएस ने यहाँ से तीन संदिग्ध आतंकियों को गिरफ्तार किया है, जिनके पास से आधुनिक विदेशी हथियार और घातक रासायनिक पदार्थ बरामद किए गए। प्रारंभिक जांच में जो तथ्य सामने आए हैं, वे चौंकाने वाले हैं—ये तीनों युवक देश में रासायनिक हमले की साजिश रच रहे थे और आईएसआईएस से प्रेरित एक नेटवर्क से जुड़े हुए थे।

राज्य एटीएस के सूत्रों ने बताया कि पकड़े गए तीनों आतंकियों में एक का नाम डॉ. अहमद मोहिउद्दीन सैयद है, जो हैदराबाद का रहने वाला है। बाकी दो — मोहम्मद सुहेल और आज़ाद सैफी — उत्तर प्रदेश के बताए जा रहे हैं। तीनों की उम्र 25 वर्ष के आसपास है, यानी जवानी की दहलीज़ पर ही उन्होंने मौत का कारोबार शुरू कर दिया था। एटीएस टीम ने इनके पास से दो ग्लॉक पिस्तौल, एक बेरेटा पिस्तौल, 30 जिंदा कारतूस और चार लीटर कैस्टर ऑयल बरामद किया है। अधिकारियों के अनुसार, इस कैस्टर ऑयल का इस्तेमाल एक घातक रासायनिक ज़हर तैयार करने में किया जा रहा था — ऐसा ज़हर, जो साइनाइड से भी अधिक प्राणघातक बताया गया है।

जांच में पता चला है कि यह गिरोह गुजरात में किसी भीड़भाड़ वाले

धार्मिक स्थल या सार्वजनिक कार्यक्रम को निशाना बनाने की योजना बना रहा था। सुरक्षा एजेंसियों को इनपुट मिले थे कि राज्य में कुछ विदेशी हैंडलर्स के इशारे पर काम कर रहे युवा, इंटरनेट के ज़रिए विस्फोटक और रासायनिक हथियार बनाने की तकनीक सीख रहे हैं। इन्हीं सुरागों के आधार पर जब एटीएस ने निगरानी बढ़ाई, तो अडालज टोल प्लाज़ा पर यह बड़ी सफलता मिली।

अधिकारियों का कहना है कि यह गिरोह एक "साइलेंट केमिकल अटैक" की तैयारी में था, यानी ऐसा हमला जिसमें विस्फोट नहीं होता, लेकिन कुछ ही मिनटों में सैकड़ों लोगों की जान जा सकती है। इस तरह के हमले में ज़हर को हवा, पानी या खाने के ज़रिए फैलाने की योजना थी। पूछताछ में आतंकियों ने यह भी कबूल किया है कि वे इंटरनेट पर "डार्क वेब" से कुछ निर्देश प्राप्त कर रहे थे और अपने प्रयोग अहमदाबाद के बाहरी इलाके में स्थित एक किराए के घर में कर रहे थे।

राज्य एटीएस प्रमुख ने बताया कि आतंकियों को हथियार सप्लाई करते वक्त ही उन्हें धर दबोचा गया। टीम को पहले से सूचना थी कि अडालज के पास हथियारों का सौदा होने वाला है। जब संदिग्ध कार वहां पहुँची, तो एजेंसियों ने चारों ओर से घेर लिया। बिना एक भी गोली चले तीनों को गिरफ्तार कर लिया गया। मौके से बरामद हथियारों की जांच चल रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि यह रासायनिक हमला सफल हो जाता, तो नुकसान का पैमाना भयावह होता — यह सिर्फ गुजरात ही नहीं, बल्कि पूरे देश की सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा साबित हो सकता था।

अब सुरक्षा एजेंसियाँ तीनों के संपर्कों की गहराई से जांच में जुटी हैं। यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि इन आतंकियों को हथियार और रासायनिक सामग्री कहाँ से मिली, और क्या इनके पीछे कोई बड़ा संगठन सक्रिय है। एटीएस ने देश के अन्य राज्यों में भी अपने नेटवर्क को सतर्क कर दिया है ताकि इनसे जुड़े संभावित सहयोगियों को चिन्हित किया जा सके।

इस पूरी कार्रवाई को गुजरात एटीएस की अब तक की सबसे अहम सफलताओं में से एक माना जा रहा है। इसने साबित कर दिया कि सुरक्षा एजेंसियाँ न केवल सतर्क हैं, बल्कि किसी भी आतंकी प्रयास को उसके आरंभिक चरण में ही कुचल देने में सक्षम हैं। फिलहाल गिरफ्तार तीनों आरोपियों से पूछताछ जारी है और यह उम्मीद जताई जा रही है कि आने वाले दिनों में इनके विदेशी नेटवर्क का पूरा चेहरा उजागर होगा।

गुजरात, जो विकास और उद्योग के लिए जाना जाता है, अब एक बार फिर इस घटना से चौकन्ना हो गया है। लेकिन राहत की बात यही है कि यह साजिश वक्त रहते पकड़ी गई — वरना शायद आज यह खबर किसी त्रासदी की होती, न कि सफलता की।

भारत की एकता और आत्मनिर्भरता पर डॉ. मोहन भागवत का आह्वान, बोले — थोरियम अनुसंधान बने राष्ट्रीय प्राथमिकता

(जीएनएस)। बेंगलुरु का वातावरण उस समय राष्ट्रवाद और आत्मचिंतन की भावना से गूंज उठा, जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने पीईएस विश्वविद्यालय में आयोजित "संघ की सौ वर्ष यात्रा : नवक्षितिज" व्याख्यानमाला में अपने विचार रखे। उनका संबोधन केवल शब्दों का प्रवाह नहीं था, बल्कि एक वैचारिक दस्तावेज की तरह था — जिसमें भारत की एकता, सांस्कृतिक चेतना, सीमाओं की सुरक्षा और वैज्ञानिक आत्मनिर्भरता का समग्र दर्शन निहित था। डॉ. भागवत ने अपने उद्बोधन की शुरुआत इस चेतावनी से की कि धर्मांतरण और राजनीतिक विभाजन आज भारत की अखंडता के लिए सबसे बड़े खतरे हैं। उन्होंने कहा कि "राजनीति अकसर समाज को तोड़ने का काम करती है, लेकिन हिंदू समाज को स्वयं विभाजित नहीं होना चाहिए।" उन्होंने स्पष्ट कहा कि भारत की आत्मा उसकी सनातन संस्कृति में बसती है — एक ऐसी संस्कृति, जो सहिष्णुता, एकता और समरसता पर आधारित है। "हमारा धर्म किसी का विरोध नहीं करता, बल्कि सबको जोड़ता है। यदि हम अपनी परंपराओं से विमुख होंगे, तो राष्ट्र की नींव

हिल जाएगी," उन्होंने दृढ़ स्वर में कहा। संघ प्रमुख ने इतिहास का हवाला देते हुए बताया कि पिछले तीन सौ वर्षों में अनेक विदेशी आक्रमण और धर्मांतरण के प्रयास हुए, लेकिन भारत की आत्मा अडिग रही। "हमारी मिट्टी ने सब कुछ सहा, पर अपनी पहचान नहीं खोई। यही भारत की सबसे बड़ी शक्ति है," उन्होंने कहा। उन्होंने यह भी जोड़ा कि प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह अपनी संस्कृति, भाषा, परंपरा और मूल्यों की रक्षा करे — क्योंकि यही राष्ट्र की जीवन-रेखा हैं।

आर्थिक दृष्टि से बोलते हुए उन्होंने कहा कि भारत का भविष्य केवल कॉर्पोरेट या विदेशी निवेश पर निर्भर नहीं है, बल्कि कृषि, एमएसएमई और स्वरोजगार जैसे स्थानीय क्षेत्रों की मजबूती पर टिका है। उन्होंने कहा कि "भारत की अर्थव्यवस्था का हृदय गाँवों में धड़कता है। जब तक गाँव आत्मनिर्भर नहीं होंगे, तब तक भारत का विकास अधूरा रहेगा।" परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र पर बात करते हुए डॉ. भागवत ने एक अत्यंत महत्वपूर्ण सुझाव दिया — कि भारत को यूरेनियम की बजाय थोरियम पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उनके अनुसार, थोरियम न केवल एक सुरक्षित विकल्प है बल्कि भारत में इसकी उपलब्धता भी प्रचुर मात्रा में है। "यदि भारत थोरियम अनुसंधान में अग्रणी बन जाए, तो वह न केवल अपनी ऊर्जा जरूरतें पूरी कर सकेगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक स्थायी समाधान तैयार करेगा," उन्होंने कहा। यह वक्तव्य भारत की वैज्ञानिक नीति के लिए दिशा-सूचक माना जा रहा है, क्योंकि लंबे समय से देश में थोरियम भंडार के उपयोग पर पर्याप्त शोध नहीं हुआ है। अपने भाषण में उन्होंने संघ की भूमिका पर भी प्रकाश डाला। "संघ कोई राजनीतिक संगठन नहीं है, न ही सरकार का हिस्सा। हम समाज में जागरूकता लाने का काम करते हैं। हमारी भूमिका राष्ट्र की चेतना को जीवित रखना और राष्ट्रीय दृष्टिकोण को मजबूत करना है," उन्होंने कहा। जब उनसे सीमा सुरक्षा और अवैध प्रवास के मुद्दे पर प्रश्न पूछा गया, तो उनका उत्तर व्यंग्य और यथार्थ का संगम था। उन्होंने कहा, "भारत की सीमाओं की स्थिति कई जगह इतनी अजीब है कि कहीं रसोई बांग्लादेश में है और बाथरूम भारत में।" उन्होंने इस उदाहरण के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि सीमाओं को सख्त सुरक्षा की आवश्यकता है, परंतु साथ ही स्थानीय सामाजिक और भौगोलिक परिस्थितियों का ध्यान रखना भी उतना ही आवश्यक है। दो दिवसीय इस व्याख्यानमाला में संघ के वरिष्ठ पदाधिकारी — सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले, जिला संघचालक डॉ. पी. वामन शेनॉय और कर्नाटक दक्षिण प्रांत संघचालक जी.एस. उमापति — भी उपस्थित रहे। सभागार में बैठे सैकड़ों छात्रों और शिक्षाविदों ने डॉ. भागवत के विचारों को गहराई से सुना, जिनमें आध्यात्मिकता, राष्ट्रवाद और विज्ञान का एक अद्भुत संतुलन था।

अंत में उन्होंने कहा, "भारत की शक्ति उसकी विविधता में नहीं, बल्कि उस विविधता के भीतर छिपी एकता में है। जब तक हम अपनी पहचान और अपनी जड़ों से जुड़े रहेंगे, कोई शक्ति हमें पराजित नहीं कर सकती।"

चीन ने कोरला नाका बंद करने का लिया निर्णय, नेपाल-चीन व्यापार पर संकट के बादल गहराए

(जीएनएस)। बेंगलुरु का वातावरण उस समय राष्ट्रवाद और आत्मचिंतन की भावना से गूंज उठा, जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने पीईएस विश्वविद्यालय में आयोजित "संघ की सौ वर्ष यात्रा : नवक्षितिज" व्याख्यानमाला में अपने विचार रखे। उनका संबोधन केवल शब्दों का प्रवाह नहीं था, बल्कि एक वैचारिक दस्तावेज की तरह था — जिसमें भारत की एकता, सांस्कृतिक चेतना, सीमाओं की सुरक्षा और वैज्ञानिक आत्मनिर्भरता का समग्र दर्शन निहित था। डॉ. भागवत ने अपने उद्बोधन की शुरुआत इस चेतावनी से की कि धर्मांतरण और राजनीतिक विभाजन आज भारत की अखंडता के लिए सबसे बड़े खतरे हैं। उन्होंने कहा कि "राजनीति अकसर समाज को तोड़ने का काम करती है, लेकिन हिंदू समाज को स्वयं विभाजित नहीं होना चाहिए।" उन्होंने स्पष्ट कहा कि भारत की आत्मा उसकी सनातन संस्कृति में बसती है — एक ऐसी संस्कृति, जो सहिष्णुता, एकता और समरसता पर आधारित है। "हमारा धर्म किसी का विरोध नहीं करता, बल्कि सबको जोड़ता है। यदि

हम अपनी परंपराओं से विमुख होंगे, तो राष्ट्र की नींव हिल जाएगी," उन्होंने दृढ़ स्वर में कहा। संघ प्रमुख ने इतिहास का हवाला देते हुए बताया कि पिछले तीन सौ वर्षों में अनेक विदेशी आक्रमण और धर्मांतरण के प्रयास हुए, लेकिन भारत की आत्मा अडिग रही। "हमारी मिट्टी ने सब कुछ सहा, पर अपनी पहचान नहीं खोई। यही भारत की सबसे बड़ी शक्ति है," उन्होंने कहा। उन्होंने यह भी जोड़ा कि प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह अपनी संस्कृति, भाषा, परंपरा और मूल्यों की रक्षा करे — क्योंकि यही राष्ट्र की जीवन-रेखा हैं। आर्थिक दृष्टि से बोलते हुए उन्होंने कहा कि भारत का भविष्य केवल कॉर्पोरेट या विदेशी निवेश पर निर्भर नहीं है, बल्कि कृषि, एमएसएमई और स्वरोजगार जैसे स्थानीय क्षेत्रों की मजबूती पर टिका है। उन्होंने कहा कि "भारत की अर्थव्यवस्था का हृदय गाँवों में धड़कता है। जब तक गाँव आत्मनिर्भर नहीं होंगे, तब तक भारत का विकास अधूरा रहेगा।" परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र पर बात करते हुए डॉ. भागवत ने एक अत्यंत महत्वपूर्ण सुझाव दिया — कि भारत को यूरेनियम की बजाय थोरियम पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उनके अनुसार, थोरियम न केवल एक सुरक्षित विकल्प है बल्कि भारत में इसकी उपलब्धता भी प्रचुर मात्रा में है। "यदि भारत थोरियम अनुसंधान में अग्रणी बन जाए, तो वह न केवल अपनी ऊर्जा जरूरतें पूरी कर सकेगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक स्थायी समाधान तैयार करेगा," उन्होंने कहा। यह वक्तव्य भारत की वैज्ञानिक नीति के लिए दिशा-सूचक माना जा रहा है, क्योंकि लंबे समय से देश में थोरियम भंडार के उपयोग पर पर्याप्त शोध नहीं हुआ है। अपने भाषण में उन्होंने संघ की भूमिका पर भी प्रकाश डाला। "संघ कोई राजनीतिक संगठन नहीं है, न ही सरकार का हिस्सा। हम समाज में जागरूकता लाने का काम करते हैं। हमारी भूमिका राष्ट्र की चेतना को जीवित रखना और राष्ट्रीय दृष्टिकोण को मजबूत करना है," उन्होंने कहा। जब उनसे सीमा सुरक्षा और अवैध प्रवास के मुद्दे पर प्रश्न पूछा गया, तो उनका उत्तर व्यंग्य और यथार्थ का संगम था। उन्होंने कहा, "भारत की सीमाओं की स्थिति कई जगह इतनी अजीब है कि कहीं रसोई बांग्लादेश में है और बाथरूम भारत में।" उन्होंने इस उदाहरण के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि सीमाओं को सख्त सुरक्षा की आवश्यकता है, परंतु साथ ही स्थानीय सामाजिक और भौगोलिक परिस्थितियों का ध्यान रखना भी उतना ही आवश्यक है। दो दिवसीय इस व्याख्यानमाला में संघ के वरिष्ठ पदाधिकारी — सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले, जिला संघचालक डॉ. पी. वामन शेनॉय और कर्नाटक दक्षिण प्रांत संघचालक जी.एस. उमापति — भी उपस्थित रहे। सभागार में बैठे सैकड़ों छात्रों और शिक्षाविदों ने डॉ. भागवत के विचारों को गहराई से सुना, जिनमें आध्यात्मिकता, राष्ट्रवाद और विज्ञान का एक अद्भुत संतुलन था।

कानूनी सहायता सिर्फ परोपकार नहीं, राष्ट्र के प्रति नैतिक जिम्मेदारी है: मुख्य न्यायाधीश गवई

(जीएनएस)। नई दिल्ली। न्याय केवल कुछ लोगों का विशेषाधिकार नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का मौलिक अधिकार है — इस भावना को दोहराते हुए भारत के मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई ने रविवार को कहा कि कानूनी सहायता केवल दान या परोपकार नहीं, बल्कि यह राष्ट्र के प्रति हर विधिक संस्था और नागरिक की नैतिक तथा संवैधानिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि न्याय तक समान पहुंच लोकतंत्र की आत्मा है और इसे सुनिश्चित करना सुशासन की सबसे बुनियादी शर्तों में से एक है। मुख्य न्यायाधीश गवई 'लीगल एड डिलीवरी मैकेनिज्म को मजबूत बनाने' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन सत्र और लीगल सर्विसेज डे समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि लीगल एड (कानूनी सहायता) को केवल जरूरतमंदों की मदद के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसे शासन व्यवस्था का एक अभिन्न हिस्सा माना जाना चाहिए — ऐसा ढांचा जो कानून के शासन को समाज के हर कोने तक पहुंचाने का काम करता है। सीजेआई ने कहा कि भारत का संविधान प्रत्येक नागरिक को समान अवसर और न्याय की गारंटी देता है, और जब तक न्याय तक पहुंच असमान रहेगी, तब तक यह वादा अधूरा रहेगा। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि लीगल सर्विसेज अथॉरिटीज (NALSA और SLSA) का कार्य केवल सामाजिक सेवा नहीं, बल्कि न्याय प्रशासन का वह स्तंभ है जो राज्य की संवैधानिक जिम्मेदारी को व्यावहारिक रूप देता है। उन्होंने कहा, "कानून का शासन तभी जीवंत रहेगा जब न्याय हर गली-मोहल्ले तक पहुंचे और सबसे कमजोर व्यक्ति तक उसकी रोशनी पहुंचे।" सीजेआई गवई ने सुझाव दिया कि लीगल सर्विसेज संस्थाओं को एक सलाहकार समिति (Advisory Committee) का गठन करना चाहिए, जिसमें वर्तमान कार्यकारी अध्यक्षों के साथ-साथ आने वाले दो या तीन कार्यकारी प्रमुखों को भी शामिल किया जाए। उनके अनुसार, यह व्यवस्था नीति-निर्माण और क्रियान्वयन में निरंतरता बनाए रखेगी और "व्यक्ति-केन्द्रित दृष्टिकोण" के बजाय "संस्थान-केन्द्रित दृष्टिकोण" को प्रोत्साहित करेगी। उन्होंने कहा कि अक्सर कार्यकारी प्रमुखों के बदलने से प्राथमिकताएं बदल जाती हैं, जिससे योजनाओं का प्रवाह रुक जाता है, और यह दीर्घकालिक संस्थागत विकास में बाधा बनती है।

उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि NALSA के 30 वर्ष पूर्ण होने के इस अवसर पर अब लीगल एड सिस्टम को केवल योजनाओं की श्रृंखला के रूप में नहीं, बल्कि एक सशक्त राष्ट्रीय मिशन के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह मिशन तभी सफल होगा जब यह "विचारों की विविधता" और "क्रियान्वयन की स्थिरता" दोनों को साथ लेकर आगे बढ़े।

मुख्य न्यायाधीश ने न्यायपालिका, वकीलों और विधिक सहायता कार्यकर्ताओं से अपील की कि वे न्याय के इस मिशन को प्रशासनिक दक्षता के साथ आगे बढ़ाएं। उन्होंने कहा कि हर न्यायिक अधिकारी और अधिवक्ता को यह समझना चाहिए कि न्याय देना केवल अदालत का काम नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग की नैतिक जिम्मेदारी है।

बेलगावी में भारत-श्रीलंका की सेनाओं का संयुक्त दमखम, 'मित्र शक्ति 2025' से आतंकवाद-रोधी सहयोग को नई दिशा

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत और श्रीलंका की सेनाएं एक बार फिर साझा ताकत और तालमेल का प्रदर्शन करने जा रही हैं। सोमवार, 10 नवंबर से कर्नाटक के बेलगावी स्थित फॉरेन ट्रेनिंग नोड में शुरू होने जा रहा संयुक्त सैन्य अभ्यास 'मित्र शक्ति 2025' दोनों देशों के बीच बढ़ते रक्षा संबंधों का प्रतीक माना जा रहा है। 23 नवंबर तक चलने वाले इस अभ्यास में आतंकवाद-रोधी अभियानों, शहरी युद्ध रणनीतियों और मानवीय सहायता अभियानों के उन्नत प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। भारतीय सेना के प्रवक्ता के अनुसार, यह 'मित्र शक्ति' का 11वां संस्करण है, जो भारत और श्रीलंका की सेनाओं के बीच संचालनात्मक सामंजस्य और पारस्परिक विश्वास को और मजबूत करेगा। इस अभ्यास का उद्देश्य ऐसे साझा अभियानों के लिए तैयारी करना है, जो शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में आतंकवाद या चरमपंथ से निपटने में सहायक हों। दोनों सेनाएं एक-दूसरे की रणनीति, युद्ध कौशल और मानवीय सहायता प्रबंधन के अनुभव साझा करेंगी, ताकि वास्तविक परिस्थितियों में संयुक्त अभियानों को अधिक प्रभावी ढंग से अंजाम दिया जा सके। 'मित्र शक्ति' की शुरुआत वर्ष 2013 में हुई थी, जब भारत और श्रीलंका ने पहली बार आतंकवाद-रोधी अभियानों में संयुक्त प्रशिक्षण की दिशा में कदम बढ़ाया था। तब से यह अभ्यास न केवल द्विपक्षीय रक्षा सहयोग का एक मजबूत स्तंभ बन चुका है, बल्कि दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय स्थिरता के लिए भी अहम भूमिका निभा रहा है। बीते वर्षों में इस अभ्यास के माध्यम से दोनों देशों की सेनाएं संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों, आपदा प्रबंधन और संघर्ष क्षेत्र में मानवीय सहायता जैसे विविध अभियानों में समन्वय स्थापित करने में सक्षम हुई हैं।

इस वर्ष के अभ्यास में सामरिक योजना (tactical planning), फील्ड ट्रेनिंग एक्सरसाइज़, मिशन सिमुलेशन और लाइव ऑपरेशनल ड्रिल्स जैसे कई चरण शामिल हैं। इसके माध्यम से दोनों सेनाएं आतंकवाद-रोधी अभियानों के लिए नवीनतम तकनीकों और उपकरणों के प्रयोग का भी अभ्यास करेंगी। भारतीय पक्ष से इस अभ्यास में गोरखा राइफल्स की टुकड़ी भाग ले रही है, जबकि श्रीलंका की ओर से स्पेशल फोर्सेज और एयरबोर्न यूनिट्स शामिल हैं। रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि 'मित्र शक्ति 2025' न केवल भारत-श्रीलंका के बीच रक्षा सहयोग को सुदृढ़ करेगा, बल्कि हिंद महासागर क्षेत्र में साझा सुरक्षा ढांचे को भी नई मजबूती देगा। इससे क्षेत्र में आतंकवाद, समुद्री डकैती और संगठित अपराध जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए बेहतर रणनीतिक तालमेल विकसित होगा। यह अभ्यास दक्षिण एशिया में भारत की सुरक्षा और स्थिरता के प्रति प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है। इसी दौरान, भारतीय सेना देश के अन्य हिस्सों में भी उच्च-स्तरीय युद्धाभ्यास कर रही है। इनमें प्रमुख है 'एक्सरसाइज त्रिशूल', जो थार रैप्टर ब्रिगेड के तहत राजस्थान के मरुस्थलीय इलाकों में संचालित की जा रही है। दक्षिण कमान के नेतृत्व में आयोजित इस युद्धाभ्यास में 'सुदर्शन चक्र' और 'कोणार्क' कोर की मैकेनाइज्ड यूनिट्स भाग ले रही हैं। हाल ही में दक्षिण कमान ने 'मरुज्वाला' और 'अखंड प्रहार' जैसे व्यापक युद्धाभ्यास भी पूरे किए हैं, जो थलसेना, नौसेना और वायुसेना के संयुक्त ढांचे के अंतर्गत त्रि-सेवा समन्वय को और सशक्त बना रहे हैं।

संपादकीय

सार्वजनिक स्थानों से आवारा कुत्तों को हटाने का निर्देश, क्या अब जागेंगे स्थानीय निकाय?

यह स्वागत योग्य तो है कि सुप्रीम कोर्ट ने स्कूलों, अस्पतालों, हाईवे, रेलवे स्टेशनों और अन्य सार्वजनिक स्थानों से आवारा कुत्तों को हटाने का निर्देश पारित कर दिया, लेकिन बात तब बनेगी, जब ऐसा वास्तव में हो सके। चूंकि शीर्ष कोर्ट ने आवारा कुत्तों के साथ बेसहारा पशुओं को भी सार्वजनिक स्थलों से हटाने का निर्देश दिया है, इसलिए यह सहज ही समझा जा सकता है कि स्थानीय निकायों की चुनौती बढ़ गई है।

अभी उनके पास इतने संसाधन ही नहीं हैं कि वे यह काम कर सकें। संसाधनों के अभाव के साथ ही उनके पास इच्छाशक्ति भी नहीं है। इसका प्रमाण यह है कि सुप्रीम कोर्ट ने यह पाया था कि इसी संदर्भ में उसके पहले के आदेश पर अधिकतर राज्यों ने अपना जवाब ही दाखिल नहीं किया। इसी कारण उसे राज्यों के मुख्य सचिवों को तलब करना पड़ा। सुप्रीम कोर्ट ने आवारा कुत्तों और बेसहारा पशुओं को हटाने के साथ ही उनका टीकाकरण, बंध्याकरण करने और उनके लिए विशेष बाड़े एवं आश्रयस्थल बनाने का भी आदेश दिया है।

यह सब होना ही चाहिए, लेकिन तथ्य यह है कि देश के कई प्रमुख शहरों में भी आवारा कुत्तों और बेसहारा पशुओं के लिए आश्रयस्थल नहीं हैं। स्पष्ट है कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर अमल होना एक टेढ़ी खीर है। यह ठीक है कि उसने आठ सप्ताह बाद अपने आदेश के अमल की स्थिति पर रिपोर्ट मांगी है, लेकिन आशंका यही है कि आवारा कुत्तों और बेसहारा पशुओं को हटाने के उसके आदेश का पालन करने के नाम पर दिखावटी कार्रवाई हो सकती है। यदि ऐसा होता है तो समस्या जस की तस रहने वाली है।

अच्छा हो कि सुप्रीम कोर्ट इस पर निगाह रखे कि उसके आदेश पर सही तरह अमल हो रहा है या नहीं? यह इसलिए आवश्यक है, क्योंकि उसके ऐसे कई आदेशों पर अब तक अमल नहीं हो सका है। इनमें से एक यातायात में बाधक धार्मिक स्थलों को हटाने का आदेश है। आवारा कुत्तों और बेसहारा पशुओं को सार्वजनिक स्थलों से हटाने के सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर सही तरह अमल तब तक संभव नहीं, जब तक राज्य सरकारें गंभीरता का परिचय नहीं देतीं।

सुप्रीम कोर्ट आवारा कुत्तों की समस्या पर कितनी भी सख्ती का परिचय दे, राज्यों का रवैया यही बताता है कि उनकी नजर में यह कोई बड़ी समस्या नहीं। उनका यही रवैया बेसहारा पशुओं को लेकर भी है। राज्य सरकारों का ऐसा ढुलमुल रवैया तब है, जब आवारा कुत्ते और बेसहारा पशु दुर्घटनाओं का कारण बनते रहते हैं।

उचित यह होगा कि राज्य सरकारें यह समझें कि यदि नगर निकाय अपने हिस्से की जिम्मेदारियों का निर्वाह करने के लिए सक्रिय नहीं होते तो शहरी जीवन की समस्याएं बढ़ती ही जानी हैं। यही सही समय है कि वे स्थानीय निकायों को सक्षम बनाने के साथ ही उन्हें जवाबदेह भी बनाएं।

भविष्य में पौधों से रोशन होंगे स्मार्ट शहर

> आने वाले समय में पेड़-पौधे बिना बैटरी के चमकते हुए सड़कों और बाग-बगीचों को रोशन करेंगे। वैज्ञानिकों ने ऐसे पौधों का विकास किया है जो सूर्य की रोशनी में रिचार्ज होकर प्राकृतिक बायोल्यूमिनेसेंस का अनुभव कराते हैं।

आने वाले समय में पेड़ सड़कों को रोशन करेंगे और बाग-बगीचे पौधों के रंग-बिरंगे प्रकाश में चमकेंगे। पेड़-पौधों का चमकना आपको कुछ विचित्र लग सकता है लेकिन प्रकृति में जैव प्रकाश अथवा बायोल्यूमिनेसेंस के कई उदाहरण पहले से मौजूद हैं, जिनमें जंगल की जमीन पर चमकने वाले मशरूम और समुद्र को रोशन करने वाले प्लैंकटन नामक सूक्ष्म पौधे शामिल हैं। जैव प्रकाश के इन प्राकृतिक नजारों से प्रेरित होकर वैज्ञानिकों ने चमकने वाले बगीचों और अपने आप जगमग होने वाले शहरों के बारे में सोचना शुरू कर दिया है। वैज्ञानिक ऐसे पौधे बनाने में सफल हो गए हैं जो बहुत तेज चमकते हैं और मिनटों में रिचार्ज हो जाते हैं। ऐसे पौधों को न तो बैटरी चाहिए और न ही कोई प्लग। इनमें किसी आनुवंशिक छेड़छाड़ की आवश्यकता भी नहीं पड़ती।

मैटर पत्रिका में प्रकाशित एक अध्ययन में रिसर्चरों ने ऐसे चमकते पौधों का वर्णन किया है, जो सूर्य के प्रकाश में रिचार्ज होते हैं और रंगीन आभा उत्सर्जित करते हैं। रिसर्चरों ने पाया कि पत्तियों में प्रकाश-संग्रही कणों का इंजेक्शन लगाने के बाद पौधे छोटे रात्रि लैंपों को टक्कर देने लायक प्रकाश उत्सर्जित करने में सक्षम हो जाते हैं। वैज्ञानिकों ने पौधों को चमकदार बनाने के लिए घरों के अंदर रखे जाने वाले सजावटी पौधों को चुना। इन छोटे रसीले पौधों में मोटे तने और मोटी पत्तियां होती हैं। इन्हें 'सक्युलेंट' भी कहा जाता है। शोधकर्ताओं ने पौधों में प्रकाश उत्पन्न करने के लिए पत्तियों की कोशिकाओं के बीच प्राकृतिक स्थानों में छोटे, प्रकाश-संग्रही क्रिस्टल डालने की एक विधि विकसित की है।

ये क्रिस्टल सूर्य के प्रकाश या घर के अंदर की तेज रोशनी में चार्ज होते हैं, फिर रोशनी बंद होने के बाद धीरे-धीरे उस ऊर्जा को दृश्यमान चमक के रूप में छोड़ते हैं। इस चमक को आफ्टरग्लो कहा जाता है। रसीले पत्तों की आंतरिक संरचना घनी और एक समान होती है। इनमें कण समान रूप से फैलते हैं और पूरा पौधा सुचारु रूप से प्रकाशमान होता है।

शोधकर्ताओं ने पौधों के स्वास्थ्य का परीक्षण किया और हरे रंग सहित विभिन्न चमकदार रंगों का पता लगाया। उन्होंने दर्शाया कि पौधे सामान्य रूप से जीवित रहते हुए भी मृदुल प्रकाश का बैटरी-मुक्त पुनः प्रयोज्य स्रोत प्रदान कर सकते हैं। दक्षिण चीन कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और प्रथम लेखक शुटिंग लियू ने कहा कि हॉलीवुड की साइंस फिक्शन फिल्म 'अवतार' में चमकते पौधों को पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को रोशन करते हुए दिखाया गया था। उन्होंने कहा कि हम अवतार फिल्म की कल्पना को उन सामग्रियों का उपयोग करके संभव बनाना चाहते थे जिन पर हम प्रयोगशाला में पहले से ही काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा, कल्पना कीजिए कि चमकते पेड़ स्ट्रीट लाइट का भी काम करने लगें।

प्रकाशमान पौधे बनाने के लिए पहले किए गए प्रयास आनुवंशिक इंजीनियरिंग पर आधारित थे। ये विधियां आमतौर पर हल्का हरा प्रकाश उत्पन्न करती थीं और साथ में इसमें उच्च लागत और जटिल तकनीकों जैसी कई चुनौतियां भी थीं। वैज्ञानिकों ने नए तरीके में अकार्बनिक कणों का उपयोग करके इन समस्याओं को दूर किया है। रोशनी उत्पन्न करने वाले ये पदार्थ पहले से ही चमकने वाले खिलौनों और सुरक्षा संकेतों में प्रयुक्त होते हैं। ये कण सस्ते हैं और व्यापक रूप से उपलब्ध हैं। ये कण प्रकाश ऊर्जा को कुशलतापूर्वक संगृहीत करने में सक्षम हैं, जिससे ये पौधों को जीवित प्रकाश स्रोतों में बदलने के लिए एक आदर्श विकल्प बन जाते हैं। शोधकर्ताओं ने अपने प्रयोग में हरे फॉस्फोर (स्ट्रॉनशियम एल्युमिनिट) कणों का इस्तेमाल किया, जो ऊर्जा मिलने पर प्रकाश उत्सर्जित करते हैं। फॉस्फोर के क्रिस्टल एक छोटे ऊर्जा नेटवर्क की तरह काम करते हैं। चूंकि पानी पौधों की चमक को बुझा सकता है, इसलिए शोधकर्ताओं ने पत्तों के जलीय वातावरण में क्रिस्टल के कणों को स्थिर रखने के लिए उन पर फॉस्फेट की एक पतली परत चढ़ाई। पत्तियां ठोस स्लैब जैसी नहीं होतीं। उनकी कोशिकाओं के बीच सूक्ष्म गलियारे होते हैं। शोधकर्ताओं ने रसीले पत्ते में एक छोटा-सा इंजेक्शन लगाकर 'चमकते मोतियों' को उन गलियारों से प्रवाहित होने और कोशिकाओं के बाहर बसने दिया। ये कण कोशिका के अंदरूनी हिस्सों में प्रवेश नहीं करते हैं। न ही वे शिराओं को अवरुद्ध करते हैं। इस स्थिति के कारण ये कण कुशलतापूर्वक ऊर्जा से चार्ज होते रहते हैं। दूसरी तरफ पौधे का अपना तंत्र चलता रहता है। दरअसल, पत्तियों की एक समान संरचना ही इस विधि की कामयाबी का राज है। एचेवेरिया मेबिना जैसे कुछ सक्युलेंट पौधे फास्फोर कणों के मूवमेंट के लिए सही आंतरिक संरचना प्रदान करता है। इसके घने और समान रूप से फैले टिशू चैनल कणों के तेजी से प्रसार को संभव बनाते हैं, जिससे एक समान और तेज चमक पैदा होती है। सामान्य पत्तेदार पौधों की तुलना में सक्युलेंट पौधों के सघन टिशू फास्फोर कणों को आसानी से फैलने देते हैं। इससे सूर्य के प्रकाश या एलईडी प्रकाश के संपर्क में आने के कुछ ही मिनटों बाद समान रूप से चमकती पत्तियां बन जाती हैं, जिनकी चमक लगभग दो घंटे तक बनी रहती है। यह प्रक्रिया काफी सरल है और इसे दोहराने में कुछ ही मिनट लगते हैं। आप जल्द ही सार्वजनिक रूप से चमकते पौधों को देखने की उम्मीद कर सकते हैं। चमक प्रभाव को कई पौधों पर आसानी से लागू किया जा सकता है।

रिसर्चरों ने विभिन्न फॉस्फोर कणों को मिलाकर ऐसे पौधे बनाए जो न केवल हरे, बल्कि लाल, नीले और यहां तक कि सफेद रंग में भी चमकते हैं। टीम ने 56 सक्युलेंट पौधों की एक दीवार का प्रदर्शन किया जो इतनी चमकीली थी कि किताबों और आसपास की वस्तुओं को रोशन कर सकती थी। पूरी तरह से मानव निर्मित सूक्ष्म-स्तरीय सामग्री का एक पौधे की प्राकृतिक संरचना के साथ इतनी सहजता से जुड़ जाना सचमुच आश्चर्यजनक है। पौधे पहले से ही कवक और बैक्टीरिया जैसे सहायक सहयोगियों को आश्रय देते हैं जो उनकी अंतर्निहित क्षमताओं का विस्तार करते हैं। अब अकार्बनिक फॉस्फोर कण उस चक्र में अतिथि के रूप में शामिल हो गए हैं। रिसर्चरों के अनुसार पौधों की पत्तियों पर अल्ट्रा वायलेट लाइट से अक्षर या चित्र जैसे पैटर्न अस्थायी रूप से लिखे जा सकते हैं, जो सजावट और सूचना भंडारण में संभावित उपयोगों का संकेत देते हैं। पर्यावरण-अनुकूल प्रकाश व्यवस्था और रोजमर्रा के सजावटी उपयोगों में नई तकनीक के कई उपयोग हो सकते हैं। यह शोध भविष्य के शहरी नियोजन, टिकाऊ वास्तुकला और दूसरे कलात्मक अनुप्रयोगों के लिए भी अनेक संभावनाएं उत्पन करता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि प्रकाश संगृहीत करने वाले कणों से युक्त पौधे भविष्य में प्रदूषण को भांपने या सूखे का संकेत देने में भी समर्थ हो सकते हैं।

प्रेरणा

सम्मोहन का मृगतृष्णा और स्वतंत्रता का व्यंग्यात्मक आख्यान

कहते हैं कि मनुष्य के भीतर सबसे गहरा सम्मोहन वही होता है, जो उसे यह विश्वास दिला दे कि वह स्वतंत्र है। यह भ्रम सबसे सुंदर है, क्योंकि इसमें बंधन भी होता है और वह खुद को मुक्त मानता है। कविता में जब वह व्यक्ति कहता है—"जब यह सम्मोहन उतर जाएगा, मैं आसमान में उड़ जाऊँगा"—तो यह पंक्ति कोई दार्शनिक उद्घोष नहीं, बल्कि एक रिटायर होते हुए सरकारी कर्मचारी का आत्म-संवाद है। उसकी आवाज़ में न कोई विद्रोह है, न कोई उड़ान—बस वर्षों की थकान, बोझ और भीतर जमी धूल की झनक है।

वह आदमी जिसने चालीस बरस तक फाइलों के नीचे अपने सपनों को दबाया, अपने अफसर की झिड़की के साथ चाय पी, और अपनी ईमानदारी को रजिस्टर की तरह बंद करके तिजोरी में रखा, अब जब सब बीत गया तो उसे लगता है कि वह मुक्त है। यही सम्मोहन है। वह सोचता है कि अब जब तनख्वाह बंद हुई, तो आत्मा खुल जाएगी। लेकिन यह भ्रम है—क्योंकि जो आदमी पूरी ज़िंदगी नियमों की मुहर में जीता रहा, वह स्वतंत्रता का अर्थ नहीं जानता, वह बस नौकरी के अंत को "मुक्ति" का नाम दे देता है।

यह आदमी जब कहता है कि वह "घर और परिवार का सपना छोड़ देगा और हवा में उड़ जाएगा," तो यह त्याग नहीं, बल्कि थकान का विलाप है। यह वही थकान है जो हर दफ़्तर के गलियारे में गूँजती है—जहाँ हर बाबू कहता है, "अब बस दो साल और, फिर चैन की ज़िंदगी।" पर उस चैन की ज़िंदगी में चैन नहीं होता, बस एक खालीपन होता है, जो आदमी को कवि बना देता है। यही वह बिंदु है जहाँ सरकारी बाबू दार्शनिक बन जाता है—क्योंकि अब न वेतन बचा है, न आदेश, न टारगेट। अब उसके पास सिर्फ़ बीते हुए जीवन की व्यंग्यात्मक स्मृतियाँ हैं, जिन्हें वह कविता में बदलकर यह जताना चाहता है कि वह दरअसल "जाग" गया है।

"रंग-बिरंगी बहार" की जो बात कविता में कही गई है, वह आज के समाज की सबसे बड़ी विडंबना का प्रतीक है। यह बहार जनता के लिए नहीं, वादों के लिए आती है। हर चुनाव में, हर घोषणा में, हर पोस्टर में यह बहार खिलती है—'हर घर नौकरी', 'हर खेत में पानी', 'हर हाथ को काम'। पर जब यह बहार गुजर जाती है, तो पीछे रह जाती है वही "धूप, पानी और मिट्टी का खेल।" यह खेल ठेकेदारों का है, इंजीनियरों का है, अफ़सरों का है—जहाँ परियोजना की मिट्टी में धूप में सुखाई गई उम्मीदें मिलाई जाती हैं और फिर कागज़ पर पानी डालकर दिखाया जाता है कि सब हरा-भरा है।

कवि जब कहता है—"पूरे सफ़र में हँसी नहीं रुकेगी," तो यह हँसी खुशी की नहीं, व्यंग्य की है। यह वह हँसी है जो हर नागरिक के भीतर छिपी है—एक ऐसी हँसी जो आंसू रोकने के लिए आती है। क्योंकि अब समाज में हर कोई किसी न किसी की ठगी में शामिल है। अफ़सर जनता को ठगता है, नेता अफ़सर को, व्यापारी जनता को, और जनता खुद अपने विवेक को। सब एक-दूसरे को धोखा देते हुए मुस्कराते हैं, क्योंकि यह हँसी जीवित रहने का तरीका बन चुकी है। यही वह हँसी है जो व्यवस्था का सबसे स्थायी हास्य बन गई है।

"बस कोई और ट्रेन से नहीं उतरेगा"—यह पंक्ति आधुनिक सत्ता-व्यवस्था का सबसे सटीक प्रतीक है। सत्ता एक ऐसी ट्रेन है जिसमें सब सवार होना चाहते हैं, पर कोई उतरना नहीं चाहता। इस ट्रेन में चढ़ना मतलब शक्ति, सुरक्षा, और विशेषाधिकार। इस ट्रेन की खिड़की से नीचे की दुनिया छोटी दिखती है—और यह छोटापन ही संतोष का कारण बनता है। जो उतर जाए, वह पागल कहलाता है। इस ट्रेन में सफ़र करते हुए लोग बूढ़े हो जाते हैं, पर उतरने की बात सोचते ही डर लगने लगता है—कहीं यह यात्रा ही उनकी पहचान न बन गई हो! इसीलिए कवि कहता है, सब हँसते हुए सफ़र करेंगे, लेकिन उतरने की हिम्मत किसी में नहीं होगी।

"बाज़ार का थैला" इस कविता का सबसे सटीक प्रतीक है। यह थैला सबके पास है, पर कोई इसे रखना नहीं चाहता। इसमें आदमी का ईमान, आत्मा और नैतिकता सब रखी होती हैं—जिन्हें वह रोज़मर्रा के सौदों में बेचता है। कोई छोटी रिश्वत में बेचता है, कोई बड़े समझौते में। यह थैला हर व्यक्ति की पीठ पर लटका है, पर सब यह दिखाते हैं कि उनके पास कुछ नहीं। जब कवि कहता है—"मुझे यह थैला मत दो, मेरे मन में दुःख की काई जम गई है"—तो यह उस नैतिक थकान की अभिव्यक्ति है जो किसी व्यवस्था में वर्षों काम करने के बाद व्यक्ति के भीतर बैठ जाती है। वह जानता है कि सब कुछ ग़लत है, पर अब विरोध करने की इच्छा भी नहीं बची। यही वह "काई" है—दुःख और समझौते की परत।

"उपेक्षा और अपमान के राज़"—यह पंक्ति इस युग का दस्तावेज़ है। हमारे समाज की पूरी रचना इसी ताने-बाने पर खड़ी है। जो ऊपर है, वह नीचे वाले की उपेक्षा करता है, और नीचे वाला यही सपना देखता है कि एक दिन वह भी किसी को अपमानित करेगा। यह अंतहीन चक्र है—जहाँ हर छोटा आदमी एक दिन बड़ा बनने के इंतज़ार में अपने अपमान को निगलता रहता है। यह चुप्पी उसकी आत्मा को धीरे-धीरे भीतर से खोखला कर देती है। यही कारण है कि जब वह खुद सत्ता में आता है, तो दूसरों को उसी तरह अपमानित करता है जैसे उससे किया गया था—क्योंकि उसने यही सीखा है कि सम्मान कोई अधिकार नहीं, बल्कि पद का विशेषाधिकार है।

और जब कविता के अंत में कहा गया—"आओ बेचो, पानी और मिट्टी को बुलाओ"—तो यह पंक्ति व्यंग्य नहीं, चेतावनी है। आज सब कुछ बिक चुका है—नदी, जंगल, खेत, पहाड़, यहाँ तक कि आदमी की राय भी। लोकतंत्र अब नीलामी का अखाड़ा बन गया है जहाँ बोलियाँ लगती हैं, और जो सबसे ऊँचा दाम दे, वही नीति बनाता है। अब तो हवा तक बेची जा रही है—कभी ऑक्सीजन सिलेंडर में, कभी एअर क्वालिटी इंडेक्स में। इसीलिए कवि कहता है, अब तो पानी और मिट्टी को भी बुलाओ—क्योंकि जो नहीं बिका, उसे भी बेचने की तैयारी है।

राष्ट्र जागरण का प्रथम मंत्र वंदे मातरम्: केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह

हमारे देश के इतिहास में ऐसे कई महत्वपूर्ण पड़ाव आए, जब गीतों, कलाओं ने अलग-अलग रूपों में लोक भावनाओं को सहेजकर आंदोलन को आकार देने में महती भूमिका निभाई। चाहे छत्रपति शिवाजी महाराज जी की सेना के युद्धगीत हों, आजादी के आंदोलन में सेनानियों के गान हों या आपातकाल के विरुद्ध युवाओं के सामूहिक गीत, इन सबने भारतीय समाज को स्वाभिमान की प्रेरणा भी दी और एकजुट भी किया।

ऐसा ही है भारत का राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम्, जिसका इतिहास किसी युद्धभूमि से नहीं, बल्कि विद्वान बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय जी के शांत, लेकिन अडिग संकल्प से शुरू होता है। 1875 में जगद्धात्री पूजा (कार्तिक शुक्ल नवमी या अक्षय नवमी) के दिन उन्होंने उस स्रोत की रचना की, जो भारत की स्वतंत्रता का शाश्वत गीत बन गया। इन पवित्र शब्दों को लिखते हुए वे भारत की गहनतम सभ्यतागत जड़ों से प्रेरणा ले रहे थे। अथर्ववेद के उद्घोष 'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः' से लेकर देवी महात्म्य में विश्वमाता के आह्वान से प्रेरणा ले रहे थे।

बंकिम बाबू का यह मंत्र प्रार्थना भी था और भविष्यवाणी भी। वंदे मातरम् केवल भारत का राष्ट्रीय गीत ही नहीं, स्वतंत्रता आंदोलन का प्राण ही नहीं, बल्कि यह बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय जी द्वारा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की प्रथम उद्घोषणा है। इसने हमें याद दिलाया कि भारत केवल जमीन का एक टुकड़ा नहीं, बल्कि एक भू-सांस्कृतिक राष्ट्र है, जिसकी एकता उसकी संस्कृति और सभ्यता से आती है। यह केवल भू-भाग नहीं है, बल्कि तीर्थ है, स्मृति, त्याग, शौर्य और मातृत्व से बंधी पवित्र भूमि है।

जैसा कि महर्षि अरबिंद ने वर्णन किया, बंकिम आधुनिक भारत के एक ऋषि थे, जिन्होंने अपने शब्दों के माध्यम से राष्ट्र के आत्मा को पुनर्जीवित किया। उनका आनंदमठ केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि गद्य में एक मंत्र था, जिसने एक ऐसे राष्ट्र को जागृत किया, जो अपनी दिव्य शक्ति को भूल चुका था। अपने एक पत्र में बंकिम बाबू ने लिखा, 'मुझे कोई आपत्ति नहीं है, यदि मेरे सभी कार्य गंगा में बहा दिए जाएं। यह श्लोक ही अनंत काल तक जीवित रहेगा। यह एक महान गान होगा और लोगों के हृदय को जीत लेगा।' ये शब्द भविष्यसूचक थे। औपनिवेशिक भारत के सबसे अंधकारमय काल में लिखा गया वंदे मातरम् जागृति का प्रभात-गीत बन गया, एक ऐसी रचना, जिसने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को सभ्यतागत गौरव के साथ जोड़ दिया। ऐसी पंक्तियां केवल वही व्यक्ति लिख सकता था, जिसके रोम-रोम में राष्ट्र के प्रति भक्तिभाव कूट-कूट कर भरा हो।

वर्ष 1896 में रवींद्रनाथ टैगोर जी ने वंदे मातरम् को धुन में पिरोया और कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में इसे गाया, जिससे इसे वाणी और अमरता प्राप्त हुई। यह गीत भाषा और क्षेत्र की सीमाओं से आगे बढ़कर पूरे देश में गूंज उठा। तमिलनाडु में सुब्रमण्यम भारती जी ने इसका तमिल अनुवाद किया और पंजाब में क्रांतिकारियों ने इसे गाते हुए ब्रिटिश राज को खुली चुनौती दी। 1905 में बंग-भंग आंदोलन के दौरान बंगाल में विद्रोह भड़क उठा। अंग्रेजों ने वंदे मातरम्' के सार्वजनिक पाठ पर प्रतिबंध लगा दिया था, फिर भी 14 अप्रैल, 1906 को बारीसाल में हजारों लोगों ने इस आदेश की अवहेलना की।

जब पुलिस ने शांतिपूर्ण सभा पर लाठीचार्ज किया तो पुरुष और महिलाएं सड़कों पर वंदे मातरम् का नारा लगाते हुए लहूलुहान हो गए। वहां से 'वंदे मातरम् का मंत्र गदर पार्टी के क्रांतिकारियों के साथ कैलिफोर्निया पहुंच गया। यह आजाद हिंद फौज में भी गूंजा, जब नेताजी के सैनिक सिंगापुर से मार्च कर रहे थे। इसी तरह यह 1946 में रायल इंडियन नेवी की क्रांति में भी गूंजा, जब भारतीय नाविकों ने ब्रिटिश युद्धपोतों पर तिरंगा फहराया।

खुदीराम बोस से लेकर अशफाक उल्ला खां तक, चंद्रशेखर आजाद से लेकर तिरुपुर कुमारन तक, नारा एक ही था। यह अब केवल एक गीत नहीं रहा, बल्कि भारत के सामूहिक आत्मा की आवाज बन गया। महात्मा गांधी ने स्वयं स्वीकार किया था कि वंदे मातरम् में "सबसे सुस्त रक्त को भी जगाने की जादुई शक्ति" थी। इसने उदारवादियों और क्रांतिकारियों तथा विद्वानों और नाविकों तक को एकजुट किया। महर्षि अरबिंद जी ने इसीलिए कहा था कि यह 'भारत के पुनर्जन्म का मंत्र' है।

26 अक्टूबर को मन की बात कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वंदे मातरम् गीत के इस इतिहास की देशवासियों को फिर से याद दिलाई। राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 7 नवंबर से भारत सरकार की ओर से अगले एक वर्ष तक अलग-अलग कार्यक्रमों का आयोजन करने का निर्णय लिया गया है। इन विभिन्न आयोजनों के माध्यम से देश भर में वंदे मातरम् का पूर्ण गान होगा, जिससे देश की युवा पीढ़ी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के विचार को आत्मसात कर पाए।

आज जब हम भारत पर्व मना रहे हैं और सरदार पटेल की जयंती पर उन्हें श्रद्धापूर्वक स्मरण कर रहे हैं तो यह भी याद करते हैं कि कैसे सरदार साहब ने एक भारत का निर्माण कर वंदे मातरम् की भावना को ही मूर्त रूप दिया। यह गीत केवल अतीत का स्मरण मात्र नहीं, बल्कि भविष्य के लिए एक आह्वान भी है। वंदे मातरम् आज भी विकसित भारत 2047 के हमारे संकल्प को प्रेरणा दे रहा है। यह भारत के सभ्यतागत आत्मविश्वास का प्रतीक है। अब इस भावना को आत्मनिर्भर और श्रेष्ठ भारत में परिवर्तित करना हमारी जिम्मेदारी है। वंदे मातरम् स्वतंत्रता का गीत है, अटूट संकल्प की भावना है और भारत के जागरण का प्रथम मंत्र है।

राष्ट्र के आत्मा से जन्मे शब्द कभी समाप्त नहीं होते, वे सदैव जीवित रहते हैं, पीढ़ियों तक गूंजते रहते हैं। यह जयघोष युगों और पीढ़ियों में अनंत काल तक प्रतिध्वनित होता रहेगा। समय आ गया है कि हम अपने समृद्ध इतिहास, अपनी संस्कृति, अपनी मान्यताओं और अपनी परंपराओं को भारतीयता की दृष्टि से देखें।

वंदे मातरम्!

अभियान

जब देवों के गुरु बने दर्प के दास : नारद मुनि और माया का महासंघर्ष

ब्रह्मलोक की निर्मल वायु में आज एक विचित्र कंपन था। नारद मुनि की वीणा से "नारायण नारायण" की ध्वनि वैसे तो प्रतिक्षण निकलती थी, पर आज उस स्वर में एक सूक्ष्म अंतर था। पहले यह स्वर पूर्ण समर्पण का था, अब उसमें आत्मगौरव की झंकार थी। जब कामदेव अपने समस्त पुष्पबाणों के साथ पराजित हुआ था, तब नारद को यह विश्वास हो गया था कि अब संसार में कोई भी शक्ति उन्हें विचलित नहीं कर सकती। यही विश्वास धीरे-धीरे अभिमान का रूप ले बैठा — और यही से प्रारंभ हुई माया की लीला।

नारद अब लोक-लोकांतर में भ्रमण करते, देवताओं से संवाद करते, ऋषियों को उपदेश देते, और अपने हृदय में यह अनुभूति पालते कि "मैं ही तो वह हूँ, जो योग का शिखर है। जिसने काम को जीत लिया, जिसने क्रोध को शांत कर दिया, जिसने लोभ को तिलांजलि दी।" उनके चारों ओर अब यश का प्रकाश फैलने लगा था। देवता उनके चरणों में झुकते, और वे स्वयं को ब्रह्म के समान स्थिर मानने लगे थे।

एक दिन नारद मुनि का मार्ग देवलोक की ओर पड़ा। वहाँ इन्द्रसभा में आनंदोत्सव था। वीणा, मृदंग, वंशी और गायन से सम्पूर्ण नभ झंकृत था। नारद ने पूछा, "देवराज, यह कौन-सा उत्सव है जो स्वर्ग तक आलोकित है?" इन्द्र ने उत्तर दिया — "मुनिवर! आज विश्वसु गंधर्व की कन्या का स्वयंवर है। वह अनुपम सुंदरी है, जिसके सौंदर्य का वर्णन ब्रह्मा ने भी नहीं किया। देव, दानव, गंधर्व सभी यहाँ उपस्थित हैं।"

नारद मुस्कराए। उनके मन में अचानक एक विचार कौंधा — "ऐसी कन्या जब स्वयंवर में जाएगी, तो जिसे भी चुनेगी, वही त्रिलोक में सर्वश्रेष्ठ कहलाएगा। और मैं... जिसने कामदेव को परास्त किया... यदि वह मुझे चुन ले, तो यह सिद्ध हो जाएगा कि मेरी योगसिद्धि ही परम है।"

यह विचार उन्हें भीतर से आंदोलित कर गया। उन्होंने सोचा, "यदि मैं उस सभा में अपने तेज और सौंदर्य से प्रकट होऊँ, तो सब जान जाएँगे कि एक ब्रह्मचारी भी काम पर विजय प्राप्त कर, समस्त देवताओं से बढ़कर हो सकता है।" यह विचार साधारण नहीं था — यह वही सूक्ष्म बीज था, जो गर्व के रूप में उनके चित्त में जड़ पकड़ चुका था।

वे वैकुण्ठ पहुँचे। वहाँ श्रीविष्णु ध्यानावस्थित थे, और लक्ष्मीजी कमलासन पर बैठीं, उनके चरणों का स्पर्श कर रहीं थीं। नारद ने प्रणाम किया — "प्रभु! एक विनती है।" विष्णु ने मुस्कराकर कहा — "कहो नारद, तुम्हें क्या चाहिए?"

नारद बोले — "प्रभु, मैं एक स्वयंवर में जा रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि वहाँ मेरा रूप इतना मनोहर हो जाए कि वह कन्या मुझे ही अपना वर चुने। क्योंकि मुझे सिद्ध करना है कि जिसने काम को जीता, वही वास्तव में योग्य है।" विष्णु ने अपनी स्नेहमयी दृष्टि से उन्हें देखा, मानो वे सब जान रहे हों। बोले — "मुनि, क्या यह उचित है? क्या तुम इस मार्ग से गौरव प्राप्त करना चाहते हो?"

नारद ने दृढ़ स्वर में कहा — "प्रभु, मैं अपने तेज की परीक्षा देना चाहता हूँ। कृपा कर मुझे ऐसा रूप दीजिए जो देवताओं से भी श्रेष्ठ हो।"

विष्णु मुस्कराए — "तथास्तु, जैसा तुम्हें उचित लगे।"

नारद हर्षित हो उठे। उन्हें लगा कि अब वे साक्षात् सौंदर्य और तेज के अवतार बन गए हैं। वे गाते हुए उस स्वयंवर सभा की ओर चले। मार्ग में अप्सराएँ उन्हें निहारतीं, देवगण उनके तेज से चकित होते। वे सोचते — "निश्चय ही मैं त्रिलोक का आदर्श बनूँगा।"

स्वयंवर सभा में जितने देवता, असुर, गंधर्व उपस्थित थे, सब अपनी महिमा का प्रदर्शन कर रहे थे। कोई अपने रथों से प्रकाश फैला रहा था, कोई अपने आभूषणों से। उसी समय नारद मुनि भी प्रविष्ट हुए। उनके मुख पर आत्मगौरव का तेज था। सभा में सन्नाटा छा गया। सब सोचने लगे — "अब तो कन्या इन्हीं को चुनेगी।"

कन्या पुष्पमाला लेकर आई। उसके नेत्रों में दिव्य तेज था। जब वह नारद के समीप पहुँची, तो मुनि ने अपनी वीणा के तारों को छेड़ा और मन में कहा — "अब यह माला मेरे गले में आने ही वाली है।" परंतु वह कन्या आगे बढ़ गई। माला उसने उस पुरुष को पहनाई जो सामान्य रूप से वहाँ खड़ा था — वह कोई और नहीं, स्वयं श्रीविष्णु थे, जो किसी गंधर्व रूप में उपस्थित थे।

सभा में देवगण खिलखिलाकर हँस पड़े। नारद का चेहरा क्रोध और लज्जा से लाल हो गया। उन्होंने सोचा — "यह कैसी अपमानजनक बात है! जिसने स्वयं काम को परास्त किया, वह किसी कन्या के सम्मुख उपहास का पात्र बन गया!" वे क्रोध में उठे और एक सरोवर के पास पहुँचे। जब उन्होंने अपना मुख जल में देखा, तो चकित रह गए — उनके मुख पर वानर का रूप था! अब वे विक्षिप्त-से वैकुण्ठ पहुँचे। श्रीविष्णु वहाँ सदा की भाँति शांत थे। नारद गरज उठे — "प्रभु! आपने मुझे धोखा दिया। आपने कहा था कि मुझे दिव्य रूप देंगे, पर आपने तो मुझे वानर बना दिया। आपने मुझे उपहास का पात्र बना दिया। यह कैसा प्रेम है?"

विष्णु शांत स्वर में बोले — "मुनि, तुमने मुझसे सुंदर रूप माँगा था, पर मैं जानता था कि उस रूप के पीछे छिपा था तुम्हारा दर्प। तुमने काम को जीता, पर अहंकार को नहीं। मैंने तुम्हें यह दिखाया कि जो 'मैं' कहता है, वह साधक नहीं, साधना का शत्रु है। तुम्हारा यह अपमान नहीं, उद्धार है।"

नारद के नेत्रों से आँसू बहने लगे। उन्होंने कहा — "प्रभु, मैं समझ न सका कि माया कहाँ से आती है। मैं सोचता रहा कि मैंने उसे जीत लिया, पर वह मेरे भीतर 'मैं महान हूँ' बनकर प्रवेश कर गई।"

विष्णु ने उनका हाथ पकड़ा और बोले — "वत्स, यही माया की पराकाष्ठा है। वह जब बाहर से आती है, तो तुम उसे पहचान लेते हो। पर जब भीतर से आती है, तो वही योग का अंत बन जाती है। तुमने आज जो अनुभव किया, वह तप की चरम परीक्षा थी। अब तुम जान गए हो कि सच्चा योग वही है जहाँ 'मैं' शून्य हो जाता है।"

नारद का सिर झुक गया। उनके कंठ से फिर वही स्वर निकला, पर इस बार उसमें दर्प नहीं, भक्ति थी —

"नारायण, नारायण..."

वह स्वर अब समर्पण का था। उसमें विनम्रता थी, गहराई थी, और ज्ञान का सागर लहराता था। वे समझ गए थे कि भगवान किसी को दंड नहीं देते, वे केवल आत्मा का दर्प दर्पण में दिखाते हैं। कामदेव ने उन्हें नहीं हराया था, बल्कि उनके भीतर का 'मैं' ही उन्हें पराजित कर गया था।

उस दिन से नारद की भक्ति नई दिशा में प्रवाहित हुई। अब वे देवताओं के गुरु नहीं, विनम्र भिक्षु बन गए। वे जहाँ भी गए, लोगों को यही उपदेश दिया — "काम, क्रोध, लोभ से मत डरो, पर जब 'मैंने जीत लिया' कहो, तब सावधान हो जाओ। क्योंकि वही क्षण पतन का होता है।"

नारद की वीणा अब संसार के प्रत्येक कोने में गूँजने लगी —

"भक्ति का सार विनम्रता है,
ज्ञान का मूल समर्पण है,
और योग का शिखर 'मैं नहीं, केवल वह' है।"

इस प्रकार नारद की यह कथा केवल एक मुनि की नहीं, प्रत्येक साधक की है। जब तक मनुष्य यह मानता है कि "मैं मुक्त हूँ," तब तक वह बंधन में है। और जब कहता है "मैं कुछ नहीं," तभी सच्ची मुक्ति होती है।

विष्णु की यह लीला वास्तव में माया का दर्पण थी — जिसमें नारद ने अपने ही अहंकार का चेहरा देखा, और उसी से जन्मा उनका सच्चा ज्ञान।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004 (2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002 and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उत्सव अंतर्गत राज्यव्यापी सरदार@150 यूनिटी मार्च को जूनागढ से प्रस्थान कराया

▸▸ मुख्यमंत्री ने जूनागढ के ऐतिहासिक बहाउद्दीन महाविद्यालय से यूनिटी मार्च पदयात्रा का प्रारंभ कराया

▸▸ मुख्यमंत्री ने आरजी हुकूमत के स्वतंत्रता सेनानियों के परिजनों का शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया

-: मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

▸▸ यूनिटी मार्च सर्व समाज को साथ जोड़कर आत्मनिर्भर भारत के लिए प्रेरणा देगा

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केवडिया कॉलोनी में विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' के निर्माण द्वारा देश ने सरदार पटेल को सच्ची श्रद्धांजलि दी है

▸▸ यूनिटी मार्च 'एक भारत, आत्मनिर्भर भारत' की विभावना को चरितार्थ कर एकता की नींव और सुदृढ़ बनाएगा

(जीएनएस)। गांधीनग : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने लौह पुरुष तथा देश के महान निर्माता सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उत्सव तथा जूनागढ के मुक्ति दिवस के अवसर पर रविवार को सरदार@150 यूनिटी मार्च पदयात्रा को प्रस्थान कराया। श्री पटेल ने ऐतिहासिक बहाउद्दीन महाविद्यालय स्थित आरजी हुकूमत के माध्यम से मिली मुक्ति के स्मरण स्मृति स्मारक में स्वतंत्रता सेनानियों का स्मरण कर पुष्पांजलि अर्पित की।

उन्होंने पदयात्रा में सहभागी होने वाले हजारों नागरिकों को संबोधित करते हुए राज्यव्यापी यूनिटी मार्च के प्रथम चरण का प्रारंभ कराया।

इस रैली के प्रस्थान से पहले मुख्यमंत्री ने आरजी हुकूमत के इतिहास को दर्शाने वाली फोटो प्रदर्शनी भी निहारी।

उन्होंने दृढ़ विश्वास व्यक्त किया कि यूनिटी मार्च सर्व समाज को साथ जोड़कर आत्मनिर्भर भारत के लिए प्रेरणा देगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दिशादर्शन में समग्र देश में आयोजित हो रही एकता यात्रा सच्चे अर्थ में भारत को 'एक एवं अखंड' बनाकर सरदार साहब को सच्ची श्रद्धांजलि देने वाली सिद्ध होगी।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने आरजी हुकूमत के इतिहास का स्मरण करते हुए कहा कि वर्ष 1947 की 15 अगस्त को देश स्वतंत्र हुआ, लेकिन जूनागढ के नवाब की लोकमत के विरुद्ध नीति के कारण 86 दिनों के संग्राम के बाद 9 नवंबर को उपरकोट पर भारत का तिरंगा फहराए जाने के साथ जूनागढ वास्तव में स्वतंत्र हुआ था और इस प्रकार 9 नवंबर को 'जूनागढ मुक्ति दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

उन्होंने ये संस्मरण भी ताजा किए कि आरजी हुकूमत द्वारा जूनागढ को मुक्ति दिलाए जाने के बाद 13 नवंबर को इसी बहाउद्दीन महाविद्यालय के मैदान में सरदार वल्लभभाई पटेल ने सभा कर जूनागढवासियों को अभिनंदन दिया था।

श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि सरदार वल्लभभाई पटेल ने 563 देसी रजवाड़ों का भारत में विलय कर ''एक एवं अखंड भारत' बनाया था। अब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' तथा 'आत्मनिर्भर भारत' के अभियान द्वारा उसकी नींव और सुदृढ़ बना रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सरदार साहब की स्मृति चिरंजीव रहे; इसके लिए केवडिया कॉलोनी में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का निर्माण किया है और वे

प्रतिवर्ष सरदार पटले जयंती को एकता दिवस के रूप में मनाकर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर सरदार साहब को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री इस वर्ष स्टैच्यू ऑफ यूनिटी में 'भारत पर्व' का आयोजन कर आत्मनिर्भर भारत के साथ वोकल फॉर लोकल तथा 'विकसित भारत' का मार्ग और सुदृढ़ बना रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के मार्गदर्शन में धारा 370 के निर्मूलन द्वारा कच्छ से कटक और कश्मीर से कन्याकुमारी तक ''एक एवं अखंड भारत' का सरदार का स्वप्न धरातल पर उतरा है।

श्री पटेल ने कहा कि सभी साथ मिलकर चलें और समरस समाज का निर्माण हो; इसके लिए यूनिटी मार्च के माध्यम से सभी वर्गों को शामिल कर राज्यभर में यूनिटी मार्च का आयोजन किया गया है, जिसके प्रथम चरण का शुभारंभ आज ऐतिहासिक बहाउद्दीन महाविद्यालय के मैदान से हुआ है। यह सभी को प्रेरणा प्रदान करेगा।

मुख्यमंत्री ने सभी सोरठवासियों को जूनागढ मुक्ति दिवस की शुभकामनाएँ देते हए विकसित भारत के निर्माण के लिए एक एवं नेक बनकर सहभागी होने का आह्वान किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने जूनागढ के स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले आरजी हुकूमत के स्वतंत्रता सेनानियों के परिजनों का शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया।

जूनागढ जिला प्रभारी सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता डॉ. प्रद्युमनभाई वाजा ने जूनागढ के लिए आज के दिन को ऐतिहासिक बताकर कहा कि इस वर्ष सरदार साहब व बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती तथा वंदे मातरम् गीत के 150 वर्ष होने का शुभ समन्वय हुआ है। यह हम सबके लिए गर्व एवं आनंद की बात है।

डॉ. वाजा ने कहा कि सरदार वल्लभभाई पटेल ने हमें राष्ट्रीय एकता की जो विरासत दी है, उसे आगे बढ़ाना है। हम सबसे बड़े लोकतंत्र का गौरव लेते हैं, जिसके मूल में सरदार पटेल द्वारा एक किए गए सभी रजवाड़ों की राष्ट्रीय एकता की विरासत है। सरदार की दूरदर्शिता एवं अथक प्रयास के कारण भारत अखंड राष्ट्र के रूप में उभरा है। हमें सरदार साहब के योगदान को सदा-सर्वदा याद रखना है।

उन्होंने कहा कि सरदार पटेल ने अपनी कुशलता, सूझ-बूझ तथा दृढ़ता से 562 देसी रजवाड़ों को एक कर ''एक एवं अखंड भारत' का निर्माण किया था। ऐसे महामानव को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी बनाकर सम्मान दिलाया। डॉ. वाजा ने जूनागढ की मुक्ति दिवस की शुभकामनाएँ दीं।

इस अवसर पर जूनागढ की नागरिक सेवाओं के प्रोजेक्ट के लिए जूनागढ के साधु-संतों ने 51 लाख रुपए का चेक मुख्यमंत्री को अर्पित किया। नागरिक सेवाओं में जन भागीदारी की इस पहल का सभी ने सहर्ष स्वागत कर आभार व्यक्त किया।

जिला कलेक्टर श्री अनिलकुमार राणावसिया ने जूनागढ मुक्ति दिवस पर आयोजित यूनिटी मार्च के अवसर पर सभी का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि 8.6 किलोमीटर की इस पदयात्रा में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत', 'आत्मनिर्भर भारत', 'हर घर स्वदेशी' के मंत्र को चरितार्थ किया जा रहा है। जूनागढ की यह पदयात्रा हजारों नागरिकों की उपस्थिति तथा राष्ट्रीय एकता के भाव के साथ अविस्मरणीय बनी।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल भी बहाउद्दीन महाविद्यालय से पदयात्रा में जुड़े और उन्होंने यात्रा के रूट पर विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के सांस्कृतिक प्लेटफॉर्म पर सभी का अभिवादन किया।

समग्र रूट पर 19 मंच बनाए गए थे और उन पर जूनागढ के इतिहास, सांस्कृतिक विरासत सहित विभिन्न कृतियाँ भी प्रस्तुत की गईं। जिला प्रशासन तथा जिला पुलिस प्रशासन ने समग्र रूट पर यातायात व्यवस्था एवं समन्वय कर इस विशाल पदयात्रा को सफल बनाया।

इस पदयात्रा में विधि एवं न्याय प्रशासन राज्य मंत्री श्री कौशिकभी वेकरिया, सांसद श्री राजेशभाई चुडासमा, महापौर श्री धर्मेशभाई पोशिया, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री हरेशभाई ठुंमर, विधायक सर्वश्री संजयभाई कोरडिया, भगवानजीभाई करगठिया, देवाभाई मालम, अरविंद लाडाणी, महानगर पालिका आयुक्त श्री तेजस परमार, जिला विकास अधिकारी श्री एच. पी. पटेल, अग्रणी सर्वश्री गौरव रूपारेलिया, चंदूभाई मकवाणा, महंत श्री इंद्रभारती बापू, श्री महेशगिरी बापू, श्री नम्रमुनि महाराज सहित संत-महंत, पदाधिकारी-अधिकारी, विभिन्न समाज के लोग, शैक्षणिक संस्थाएँ, विभिन्न एसोसिएशन, आरजी हुकूमत के स्वतंत्रता सेनानियों के परिजन, वरिष्ठ नागरिक, युवा, पुलिस जवान, प्रबुद्ध नागरिक तथा जूनागढ के नगरजन बड़ी संख्या में सहभागी हुए।

ओडिशा के राज्यपाल डॉ. हरि बाबू कंभमपति ने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से शिष्टाचार भेंट की

▸▸ ओडिशा के राज्यपाल ने भारत पर्व में उपस्थित रहकर कलाकारों की प्रस्तुतियाँ देखीं

▸▸ डॉ. हरि बाबू कंभमपति ने एकता नगर को विश्व पर्यटन धाम बनाने के लिए राज्य सरकार की सराहना की

(जीएनएस)। गांधीनगर : ओडिशा के राज्यपाल डॉ. हरि बाबू कंभमपति ने रविवार को गांधीनगर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से शिष्टाचार भेंट की। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से देशभर में मनाई जा रही सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में इस वर्ष राष्ट्रीय एकता दिवस समारोह के साथ आयोजित होने वाला भारत पर्व गुजरात में आयोजित हुआ है। ओडिशा के राज्यपाल डॉ. हरि बाबू कंभमपति 8 नवंबर शनिवार को भारत पर्व में उपस्थित रहे।

सरदार साहब की 150वीं जयंती का गरिमामय उत्सव 15 नवंबर तक नर्मदा जिले के एकता नगर में भारत पर्व तथा एकता पर्व के साथ मनाया जा रहा है।

इस भारत पर्व में प्रतिदिन रात्रि में देश के विभिन्न राज्यों की सांस्कृतिक प्रस्तुति कर 'अनेकता में एकता ही हमारी विशेषता' का ध्येय साकार किया जा रहा है।

एक भारत, श्रेष्ठ भारत अंतर्गत इस भारत पर्व में जिन राज्यों की कलाकृतियों का प्रदर्शन तथा प्रस्तुति होते हैं, उन राज्यों के महानुभाव विशेष रूप से उपस्थित रहकर कलाकारों को प्रोत्साहित करते हैं।

इसी क्रम में शनिवार को भारत पर्व में ओडिशा के कलाकारों की सांस्कृतिक प्रस्तुति हुई। इस अवसर पर ओडिशा के राज्यपाल डॉ. हरि बाबू कंभमपति अतिथि विशेष के रूप में उपस्थित रहे।

उन्होंने एकता नगर में एकता प्रकाश पर्व की रोशनी, विश्व की सबसे

ऊँची प्रतिमा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, सरदार सरोवर रिवर बेड पावर हाउस, बटरफ्लाई पार्क, फूड कोर्ट, हस्तकला हाट, थीम पैवेलियन आदि भी देखे।

उन्होंने गांधीनगर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के साथ शिष्टाचार भेंट के दौरान एकता नगर को एक संपूर्ण विश्व पर्यटन धाम के रूप में विकसित करने की राज्य सरकार की सफलता की सराहना की।

ओडिशा के राज्यपाल ने भावना व्यक्त की कि वे भारत पर्व में सहभागी होने आए कलाकारों, हस्तकला कारीगरों सहित पर्यटकों के लिए की गई सुंदर व्यवस्थाओं से प्रभावित हुए। उन्होंने राज्य सरकार को इसके लिए अभिनंदन दिया।

श्री पटेल ने डॉ. कंभमपति को स्मृति चिह्न अर्पित कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री की अपर प्रधान सचिव श्रीमती अवंतिका सिंह ने डॉ. कंभमपति का स्वागत कर अभिवादन किया।

मारवाड़ी यूनिवर्सिटी ने रचा इतिहास, एशिया की शीर्ष रैंकिंग में पहली बार ही 353वां स्थान

(जीएनएस)। मुंबई। शिक्षा जगत के लिए यह गर्व का क्षण है जब गुजरात की अग्रणी निजी संस्था मारवाड़ी यूनिवर्सिटी ने अपनी पहली ही प्रविष्टि में क्यूएस एशिया यूनिवर्सिटी रैंकिंग्स 2026 में 353वां स्थान प्राप्त कर एक नया इतिहास रच दिया। यह उपलब्धि न केवल गुजरात बल्कि पूरे भारत के निजी विश्वविद्यालयों के लिए एक बड़ी प्रेरणा मानी जा रही है, क्योंकि यह किसी भारतीय निजी विश्वविद्यालय की अब तक की सबसे ऊँची पहली रैंकिंग है।

विश्व-प्रसिद्ध क्यूएस एशिया यूनिवर्सिटी रैंकिंग्स को उच्च शिक्षा संस्थानों की उत्कृष्टता का एक प्रमुख वैश्विक पैमाना माना जाता है। यह रैंकिंग शिक्षण की गुणवत्ता, शोध-प्रकाशन, अंतरराष्ट्रीय सहयोग, फैकल्टी-स्टूडेंट अनुपात, नियोक्ता प्रतिष्ठा और शैक्षणिक प्रभाव जैसे विभिन्न मानकों पर आधारित होती है। इस बार की रैंकिंग में

Marwadi University
Marwadi Chandarana Group

मारवाड़ी यूनिवर्सिटी ने अपने नवाचार, अकादमिक दृष्टिकोण और वैश्विक जुड़ाव के बल पर उल्लेखनीय प्रदर्शन किया।

इस ऐतिहासिक सफलता के साथ ही मारवाड़ी यूनिवर्सिटी को गुजरात की नंबर 1 निजी विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त हुआ है। विशेष रूप से, विश्वविद्यालय ने अंतरराष्ट्रीयकरण और फैकल्टी क्वालिटी के क्षेत्र में एशिया के शीर्ष 100 विश्वविद्यालयों में स्थान हासिल किया है। यह उपलब्धि इस बात का प्रमाण है कि संस्थान ने शिक्षा को स्थानीय सीमाओं से निकालकर वैश्विक मंच तक पहुँचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

विश्वविद्यालय के प्रो वाइस-चांसलर डॉ. संजीत सिंह ने इस गौरवशाली उपलब्धि पर कहा, "यह सफलता छात्रों, शिक्षकों और नेतृत्व की सामूहिक प्रतिबद्धता का परिणाम है। पहली ही बार में इतनी ऊँची रैंक हासिल करना हमारे नवाचार और वैश्विक सहयोग आधारित दृष्टिकोण का प्रमाण है। हम अब इस दिशा में और मजबूत कदम बढ़ाते हुए शोध, टेक्नोलॉजी और स्किल-आधारित शिक्षा में नए मानक स्थापित करने के लिए तत्पर हैं।" मारवाड़ी यूनिवर्सिटी की इस उपलब्धि ने यह साबित कर दिया है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, शोध-आधारित सोच और अंतरराष्ट्रीय साझेदारी से किसी भी भारतीय विश्वविद्यालय को वैश्विक मंच पर सम्मानजनक पहचान मिल सकती है। विश्वविद्यालय के छात्रों और फैकल्टी के लिए यह सम्मान एक नई प्रेरणा लेकर आया है, जिससे वे और अधिक मेहनत और नवाचार के साथ शिक्षा की दिशा में नए आयाम गढ़ सकें।

शैक्षणिक विशेषज्ञों के अनुसार, यह उपलब्धि भारत के उच्च शिक्षा क्षेत्र के लिए भी एक सकारात्मक संकेत है, क्योंकि यह दर्शाता है कि देश के निजी विश्वविद्यालय भी अब वैश्विक रैंकिंग्स में मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। गुजरात के शैक्षणिक नक्शे पर यह उपलब्धि एक स्वर्णाक्षरों में दर्ज होने वाला क्षण है, जिसने साबित किया कि समर्पण, गुणवत्ता और दृष्टि के बल पर कोई भी संस्थान अंतरराष्ट्रीय ऊँचाइयाँ छू सकता है।

भगवान बिरसा मुंडा की १५०वीं जन्म जयंती

जनजातीय गौरव वर्ष

सफल खेती, सक्षम पशुपालन

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से वनबंधु कल्याण योजना के तहत आदिजाति क्षेत्र में कृषि और पशुपालन आधारित रोजगार में वृद्धि

माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल के संकल्प से संकलित डेयरी विकास योजना और कृषि विविधीकरण योजना द्वारा आदिवासी किसान बने समृद्ध

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

''हर घर स्वदेशी
घर-घर स्वदेशी''

वनबंधु कल्याण योजना
VANBANDHU KALYAN YOJANA

संकलित डेयरी विकास और कृषि विविधीकरण योजनाओं के द्वारा आदिजाति किसानों और महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण

कृषि और डेयरी विकास योजना की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ (वर्ष २०२०-२१ से २०२४-२५):

- बागवानी योजनाओं के तहत २,०२,५९४ आदिवासी किसान लाभार्थियों को अनुमानित ₹ २३३.४५ करोड़ की सहायता
- संकलित डेयरी विकास योजना के तहत अनुमानित ₹ २०२.५६ करोड़ की लागत से ४३,८७६ आदिजाति महिलाओं को दुधारू पशुओं का वितरण
- कृषि विविधीकरण योजना के तहत अनुमानित ₹ १७४.६४ करोड़ की लागत से ४,४०,५६४ आदिजाति किसानों को बेहतर बीज, खाद किट और प्रशिक्षण के साथ मार्केट लिंकेज के लाभ
- पशुपालन की विभिन्न योजनाओं के तहत १,५३,०८७ लाभार्थियों को अनुमानित ₹ ६७.५७ करोड़ की सहायता
- अंतर्देशीय मत्स्य उद्योग के लिए ८,८४९ लाभार्थियों को अनुमानित ₹ ४९.७३ करोड़ की सहायता
- बकरा पालन योजना के तहत अनुमानित ₹ १०.३९ करोड़ की लागत से २,३१० आदिजाति महिलाओं को बकरा उछेर इकाइयों के लिए सहाय का वितरण

आदिजाति विकास विभाग, गुजरात सरकार

भागलपुर विधानसभा चुनाव 2025: 82 उम्मीदवार, 7 सीटों पर सियासी जंग में विकास और जाति का महायुद्ध

(जीएनएस)। भागलपुर। बिहार के भागलपुर जिले में चुनावी सरगर्मी अपने चरम पर है। जिले की सात विधानसभा सीटों पर कुल 82 उम्मीदवार जनता के बीच अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। चुनाव केवल उम्मीदवारों के बीच नहीं, बल्कि विकास, जातीय समीकरण और प्रतिष्ठा की लड़ाई का मैदान बन गया है। पांच सीटों पर सीधी टक्कर है, जबकि दो सीटों पर बहुकोणीय मुकाबले ने सियासी रण को और रोमांचक बना दिया है। कहलगांव और गोपालपुर में पूर्व विधायक अब निर्दलीय बनकर मैदान में हैं, जिससे चुनावी समीकरण और भी जटिल हो गए हैं। गली-चौपालों और जनसभाओं में उम्मीदवारों के वादे, जातीय गणित और विकास के मुद्दे चर्चा का विषय बने हुए हैं। नए दल जैसे जन सुराज अपनी मौजूदगी दर्ज कराने में जुटे हैं, तो पारंपरिक दल अपने पुराने गढ़ बचाने के लिए पूरी ताकत झोंक रहे हैं। हर विधानसभा का चुनावी गणित अलग है, और हर सीट की कहानी जुदा है।

भागलपुर विधानसभा में कांग्रेस के अजीत शर्मा और भाजपा के रोहित पांडेय के बीच फिर कांटे की टक्कर है। कांग्रेस एम-वाई और पचपौनिया वोटरों के भरोसे बढ़त का दावा कर रही है, जबकि भाजपा वैश्य, सवर्ण और पचपौनिया मतदाताओं पर निर्भर है। 2020 में भी यही मुकाबला हुआ था, जिसमें अजीत शर्मा ने महज 1130 मतों से जीत हासिल की थी। इस बार जन सुराज के अभय कांत झा तीसरे कोण के रूप में मैदान में हैं। कुल 12 प्रत्याशी भागलपुर में जनता की अदालत में हैं।

पीरपैंती विधानसभा में भाजपा और राजद के बीच पासवान बनाम पासवान की दिलचस्प जंग है। भाजपा ने मौजूदा विधायक ललन कुमार का टिकट काटकर मुरारी पासवान पर दांव लगाया है, जबकि राजद ने रामविलास पासवान को दोबारा मैदान में उतारा है। जन

सुराज के घनश्याम दास भी चुनाव में हैं। कुल 10 प्रत्याशी यहां मुकाबले में हैं। गंगोता, खरवार, रविदास और आदिवासी मतदाता निर्णायक भूमिका निभाएंगे।

नाथनगर विधानसभा में नई राजनीतिक हलचल है। राजद ने पूर्व प्रशासनिक अधिकारी जेड हसन को मैदान में उतारा है, जबकि एलजेपी ने जिला परिषद अध्यक्ष मिथुन कुमार पर दांव लगाया है। जन सुराज के अजय कुमार राय भी मुकाबले को त्रिकोणीय बना रहे हैं। कुल 15 प्रत्याशी यहां चुनावी रण में हैं।

सुल्तानगंज विधानसभा में जदयू, कांग्रेस और राजद के बीच त्रिकोणीय जंग है। जदयू विकास कार्यों के आधार पर वोट मांग रही है, जबकि कांग्रेस और राजद एम-वाई और पचपौनिया समीकरण पर भरोसा कर रहे हैं। कुल 12 प्रत्याशी मैदान में हैं।

कहलगांव विधानसभा में सियासी समीकरण उलझे हुए हैं। जदयू से शुभानंद मुकेश मैदान में हैं, भाजपा के बागी पूर्व विधायक पवन कुमार यादव निर्दलीय हैं। कांग्रेस और राजद ने भी प्रत्याशी उतारे हैं। कुल 13 उम्मीदवारों के बीच जातीय वोटरों की गोलबंदी और बागी उम्मीदवारों की सक्रियता ने मुकाबले को चतुष्कोणीय बना दिया है।

बिहपुर विधानसभा में भाजपा और वीआईपी के बीच सीधी जंग है। भाजपा सवर्ण, गंगोता और दलित वोटरों पर भरोसा कर रही है, जबकि वीआईपी एम-वाई और मल्लाह वोटरों पर। कुल 10 प्रत्याशी इस सीट पर मुकाबले में हैं।

गोपालपुर विधानसभा में जदयू और वीआईपी के बीच मुकाबला कड़ा है। जदयू ने वर्तमान विधायक नरेंद्र कुमार नीरज का टिकट काटकर नया दांव खेला है, वहीं वीआईपी से प्रेम सागर और राजद के शैलेश कुमार भी मैदान में हैं। कुल 10 प्रत्याशी चुनावी रण में हैं। पूर्व विधायक गोपाल मंडल की सक्रियता ने समीकरण और जटिल बना दिए हैं।

भागलपुर की यह सियासी जंग विकास और जाति के समीकरण के बीच संतुलन की परीक्षा बन गई है। हर विधानसभा क्षेत्र में चुनाव की कहानी अलग है, कहीं सीधी टक्कर है, तो कहीं बहुकोणीय मुकाबला। जनता की अदालत में अब हर उम्मीदवार का भविष्य तय होने वाला है, और भागलपुर की राजनीति इस बार अपने निर्णायक मोड़ पर है।

देरी से पहुंचे राहुल गांधी को मिली प्रतीकात्मक सजा, कांग्रेस कैंप में सबके सामने लगाए 10 पुशअप

(जीएनएस)। पचमढ़ी। मध्य प्रदेश के पचमढ़ी में चल रहे कांग्रेस जिला अध्यक्षों के प्रशिक्षण शिविर में शनिवार को एक अनोखा और दिलचस्प दृश्य देखने को मिला। पार्टी के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी जब कार्यक्रम स्थल पर लगभग 20 मिनट की देरी से पहुँचे, तो उन्हें खुद पार्टी के अनुशासन नियमों के तहत सबके सामने 10 पुशअप लगाने पड़े।

यह विशेष प्रशिक्षण शिविर कांग्रेस संगठन द्वारा आयोजित किया गया था, जिसमें देशभर के जिला अध्यक्ष, पर्यवेक्षक और वरिष्ठ पदाधिकारी शामिल थे। शिविर का मुख्य उद्देश्य था — अनुशासन, समय प्रबंधन और संगठनात्मक दक्षता पर ध्यान देना। आयोजकों ने पहले ही यह स्पष्ट कर दिया था कि जो भी प्रतिभागी निर्धारित समय पर नहीं पहुँचेगा, उसे 'सजा' के रूप में कोई हल्का शारीरिक अभ्यास या प्रतीकात्मक कार्य करना होगा ताकि समय की अहमियत सभी को समझाई जा सके।

शनिवार शाम राहुल गांधी जब कार्यक्रम स्थल पर पहुँचे तो प्रशिक्षण प्रमुख सचिन राव ने मुस्कराते हुए कहा कि नियमों के अनुसार देर

से आने वालों को सजा दी जाती है। माहौल हल्का था, लेकिन सबकी निगाहें राहुल गांधी पर थीं। राहुल ने भी हँसते हुए जवाब दिया — "तो बताइए, मेरे लिए क्या सजा तय है?" इस पर प्रशिक्षण टीम ने कहा कि उन्हें 10 पुशअप लगाने होंगे।

राहुल गांधी ने बिना किसी झिझक के मंच पर ही माइक के सामने झुके और एकदम सहज भाव से 10 पुशअप लगा दिए। जैसे ही उन्होंने अंतिम पुशअप पूरा किया, पूरा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। उपस्थित कार्यकर्ताओं ने इसे "लीडरशिप विद एग्जाम्पल" बताया — यानी नेता ने खुद अनुशासन का पालन कर एक मिसाल पेश की।

इसके बाद राहुल गांधी ने मंच संभाला और अपने संबोधन में संगठन की मजबूती, जनता से जुड़ाव और राजनीतिक रणनीति पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि "कांग्रेस का असली बल जनता के बीच की उसकी सच्चाई और अनुशासन में है। जो संगठन समय की कीमत समझता है, वही जनता का विश्वास जीतता है।"

राहुल गांधी ने यह भी कहा कि आने वाले चुनावों में पार्टी को केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि नैतिक अनुशासन और सामूहिक जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ना होगा। उन्होंने कार्यकर्ताओं से अपील की कि वे लोगों के बीच जाकर संवाद बढ़ाएँ, जमीनी मुद्दों को समझें और संगठन को निचले स्तर तक मज़बूत बनाएं।

राहुल गांधी का यह "पुशअप एपिसोड" सोशल मीडिया पर भी तेजी से वायरल हो गया। पार्टी कार्यकर्ताओं ने इसे एक सकारात्मक संदेश बताया कि कांग्रेस में अब अनुशासन, समानता और जिम्मेदारी को लेकर नई सोच उभर रही है — जहाँ शीर्ष नेता भी नियमों से ऊपर नहीं हैं।

राजनीतिक पर्यवेक्षकों के मुताबिक, राहुल गांधी का यह अंदाज कांग्रेस की छवि को एक "सक्रिय, युवा और आत्मनियंत्रित" संगठन के रूप में पेश करने की कोशिश का हिस्सा भी है। उनके सहज और आत्म-व्यंग्यात्मक रवैये ने न केवल माहौल को हल्का किया, बल्कि कार्यकर्ताओं के बीच एक नया जोश भी भर दिया।

दिल्ली में वायु प्रदूषण फिर 'गंभीर' स्तर पर, CAQM ने GRAP-3 लागू करने से किया परहेज

(जीएनएस)। नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में वायु गुणवत्ता एक बार फिर चिंता का विषय बन गई है। रविवार सुबह दिल्ली में औसत एयर क्वालिटी इंडेक्स (AQI) 391 दर्ज किया गया, जो 'गंभीर' श्रेणी के बेहद करीब है। इस सीजन की सबसे प्रदूषित सुबहों में से एक के रूप में इसे दर्ज किया गया। बावजूद इसके, वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) ने फिलहाल GRAP-3 (Stage-III) लागू न करने का फैसला किया है।

CAQM की सब-कमेटी ने रविवार को बैठक की, जिसमें मौसम विभाग (IMD) और IITM की रिपोर्टों की समीक्षा की गई। रिपोर्टों के अनुसार, अगले कुछ दिनों में वायु गुणवत्ता 'बहुत खराब' (Very Poor) स्तर पर रहने का अनुमान है। बावजूद इसके, आयोग ने कहा कि वर्तमान में तीसरे चरण की कठोर कार्रवाई की आवश्यकता नहीं है, लेकिन हालात पर लगातार नजर रखी जाएगी।

रविवार सुबह दिल्ली में घना धुंध और

स्मॉग देखा गया। तापमान गिरकर 11.7 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया, जो इस मौसम के लिए सामान्य से काफी कम है। सुबह 8 बजे AQI 391 था, जबकि दोपहर तक यह 370 पर आ गया। विशेषज्ञों के अनुसार, हवा की रफ्तार कम और तापमान में गिरावट के कारण प्रदूषक कण फैल नहीं पा रहे हैं, जिससे वायु गुणवत्ता बिगड़ रही है और सांस लेना मुश्किल हो गया।

CAQM ने कहा कि स्टेज-I और स्टेज-II के तहत लागू उपाय जारी रहेंगे। इनमें निर्माण कार्यों पर आंशिक रोक, सड़क पर पानी का छिड़काव, डीजल जेनरेटर के इस्तेमाल पर नियंत्रण और औद्योगिक इकाइयों की निगरानी शामिल हैं। आयोग ने स्पष्ट किया कि अगर प्रदूषण और बढ़ता है, तो GRAP-3 लागू करने पर दोबारा विचार किया जाएगा।

विशेषज्ञों का कहना है कि आने वाले दिनों में हवा की दिशा और ठंड बढ़ने से हालात और बिगड़ सकते हैं। ऐसे में दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र 'रेड जोन' में आ सकता है, जहां नागरिकों के लिए स्वास्थ्य संबंधी चेतावनियां जारी करनी पड़ सकती हैं।

राजधानीवासियों को सलाह दी गई है कि वे घर के अंदर रहें, मास्क पहनें और आवश्यक होने पर ही बाहर निकलें। वायु प्रदूषण की गंभीरता को देखते हुए स्कूल, स्वास्थ्य विभाग और प्रशासन द्वारा भी सतर्कता बरती जा रही है।

यह स्थिति दर्शाती है कि दिल्ली में सर्दी के मौसम और वायु प्रदूषण का मेल किस तरह स्वास्थ्य के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है। अधिकारियों का कहना है कि अगले कुछ दिनों में मौसम और प्रदूषण की निगरानी जारी रहेगी, ताकि समय पर कड़े उपाय लागू किए जा सकें और नागरिकों को सुरक्षित रखा जा सके।

झाड़-फूंक करने आए तांत्रिक की रहस्यमय मौत से फैली सनसनी, पुलिस ने बिसरा जांच के लिए भेजा

(जीएनएस)। खटीमा। उत्तराखंड के खटीमा क्षेत्र में एक रहस्यमय घटना ने ग्रामीणों को सन्न कर दिया, जब झाड़-फूंक करने आए एक तांत्रिक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। मृतक की पहचान उत्तर प्रदेश के पीलीभीत ज़िले के जहानाबाद गेहलुईया एमई गांव निवासी सगीर अहमद (60) पुत्र अली हुसैन के रूप में हुई है। वे ईंट भट्टों पर श्रमिकों की ठेकेदारी करने के साथ-साथ झाड़-फूंक का कार्य भी करते थे। जानकारी के अनुसार, सगीर अहमद शनिवार की देर शाम बरी अंजनिया टेड़ाघाट गांव पहुंचे थे। वहां निवासी सचिन राणा की पत्नी नगीना लंबे समय से लकवे की बीमारी से पीड़ित थीं। ग्रामीणों के मुताबिक, सचिन ने सगीर को बुलवाया था ताकि वे झाड़-फूंक कर अपनी पत्नी का उपचार कर सकें। देर शाम तक पूजा-पाठ और उपचार के बाद सगीर ने खाना खाया और रात को वहीं सचिन के घर पर सो गए। रविवार की सुबह जब घरवालों ने सगीर को जगाने की कोशिश की तो वे नहीं उठे। पहले तो परिवार को लगा कि शायद वह गहरी नींद में हैं, लेकिन बार-बार आवाज देने के बावजूद जब कोई

प्रतिक्रिया नहीं मिली, तो उन्होंने ग्राम प्रधान प्रेमप्रकाश पासी को सूचना दी। इसके बाद उन्हें 108 एंबुलेंस की मदद से उप जिला चिकित्सालय खटीमा लाया गया, जहाँ चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना की जानकारी मिलते ही मृतक के परिजन पीलीभीत से खटीमा पहुँच गए। वहीं महिला उपनिरीक्षक रुबी मौर्य भी दल-बल के साथ अस्पताल पहुँचीं और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम की कार्रवाई कराई।

पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मौत का कारण स्पष्ट नहीं हो पाया। चिकित्सक डा. अकलीम अहमद ने बताया कि शरीर पर कोई स्पष्ट चोट के निशान नहीं हैं, और न ही किसी बाहरी हमले के प्रमाण मिले हैं। ऐसे में मौत का कारण जानने के लिए बिसरा सुरक्षित रखकर फोरेंसिक जांच हेतु भेजा गया है। पुलिस ने सभी आवश्यक कानूनी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद शव को स्वजन के सुपुर्द कर दिया।

सगीर अहमद के परिवार में तीन पुत्र — शकील अहमद, अकील अहमद और दिलशाद, तथा दो पुत्रियाँ — फिराजन और नेहा हैं। उनकी अचानक हुई मौत से परिवार में कोहराम मच गया है। गांव में मातमी सन्नाटा छा गया है, और परिजन का रो-रोकर बुरा हाल है। स्थानीय लोगों में इस घटना को लेकर तरह-तरह की चर्चाएँ हैं। कुछ ग्रामीणों का कहना है कि सगीर ने उपचार के दौरान किसी "नकारात्मक ऊर्जा" को हटाने की प्रक्रिया की थी, जिसके बाद उनकी तबियत बिगड़ गई होगी। हालांकि पुलिस और डॉक्टरों का मानना है कि फिलहाल कोई अलौकिक पहलू नहीं दिखता, और वास्तविक कारण फोरेंसिक जांच के बाद ही स्पष्ट होगा। यह रहस्यमय मौत न केवल इलाके में सनसनी का विषय बन गई है, बल्कि इसने झाड़-फूंक और तांत्रिक क्रियाओं में अंधविश्वास के गहरे असर पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। पुलिस फिलहाल सभी पहलुओं पर जांच कर रही है और पोस्टमार्टम रिपोर्ट के साथ बिसरा जांच के परिणाम का इंतजार किया जा रहा है।

कांग्रेस से नाराज राकां (एसपी) और शिवसेना (यूबीटी) ने थर्ड फ्रंट की तैयारी तेज की, समविचारी दलों संग मैदान में उतरने की घोषणा

(जीएनएस)। नागपुर। महाराष्ट्र की राजनीति में एक बार फिर बड़ा फेरबदल देखने को मिल रहा है। नगर परिषद और नगर पालिका चुनावों से ठीक पहले महा विकास आघाड़ी (मविआ) के भीतर मतभेद खुलकर सामने आ गए हैं। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरद पवार गुट) और शिवसेना (उद्धव ठाकरे गुट) ने कांग्रेस से नाराज होकर अब तीसरा मोर्चा (थर्ड फ्रंट) तैयार करने की दिशा में कदम बढ़ा दिया है। कांग्रेस के सहयोग को लेकर ठंडे रुख से नाराज इन दलों ने समविचारी राजनीतिक दलों और सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर स्वतंत्र राजनीतिक शक्ति के रूप में चुनावी मैदान में उतरने की तैयारी शुरू कर दी है।

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरद पवार गुट) के जिला अध्यक्ष प्रवीण कुंटे ने बताया कि रविवार को नागपुर में कांग्रेस को छोड़कर अन्य समविचारी दलों की एक अहम बैठक आयोजित की गई। बैठक में आगामी नगर पंचायत, जिला परिषद और पंचायत समिति चुनावों में

संयुक्त मोर्चा बनाकर लड़ने पर सहमति बनी। कुंटे ने कहा कि "हमने तय किया है कि अब कांग्रेस पर निर्भर नहीं रहेंगे। अगले दो से तीन दिनों में इस तीसरे मोर्चे की औपचारिक घोषणा की जाएगी और एक साझा घोषणा पत्र भी जारी किया जाएगा।"

इस बैठक में कई दलों और सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि शामिल हुए। इनमें चुनाव प्रभारी सलिल देशमुख, शिवसेना (यूबीटी) जिला प्रमुख उत्तम कापसे, आम आदमी पार्टी के सोनू फटिंग, राष्ट्रीय गोंडवाना पार्टी के प्रशील कोडापे, रजत नेहरा, भीम आर्मी के अंकित राऊत, और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा) के गजानन घोडे सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे। सभी ने एक स्वर में कहा कि "कांग्रेस के असहयोगी रवैये ने विपक्ष को कमजोर किया है, इसलिए अब जनता को एक नया और ईमानदार विकल्प देने का समय आ गया है।"

राकां (एसपी) नेताओं ने कांग्रेस पर यह आरोप लगाया है कि वह गठबंधन की भावना के खिलाफ काम कर रही है और स्थानीय स्तर पर "एकला चलो" नीति अपना रही है। उनका कहना है कि पिछली बार जिला परिषद चुनाव में भी कांग्रेस ने समझौते के बावजूद कई सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे थे, जिससे राकां को नुकसान झेलना पड़ा था। इस बार राकां और शिवसेना (यूबीटी) ने तय किया है कि वे कांग्रेस के भरोसे नहीं रहेंगे और तीसरे मोर्चे के रूप में जनता के बीच उतरेंगे।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस कदम से महा विकास आघाड़ी की एकजुटता पर गहरा असर पड़ेगा। अब तक जिले में कांग्रेस का दबदबा माना जाता था, लेकिन तीसरे मोर्चे के गठन के बाद चुनावी मुकाबला त्रिकोणीय होने की पूरी संभावना है। विश्लेषकों के अनुसार, यह नया गठबंधन कांग्रेस के वोट बैंक में सेंध लगा सकता है और कई नगर परिषदों व जिला परिषदों में सत्ता समीकरण को पूरी तरह पलट सकता है।

महाराष्ट्र की राजनीति में यह घटनाक्रम ऐसे समय में हो रहा है जब राज्य में शिंदे गुट की सरकार पहले से ही स्थिरता बनाए रखने के प्रयासों में जुटी है और विपक्षी दल एकजुटता की बात कर रहे थे। लेकिन अब तीसरे मोर्चे की घोषणा से यह साफ हो गया है कि विपक्षी खेमे में एकता की बजाय वर्चस्व की लड़ाई तेज हो गई है।

राजनीतिक सूत्रों के अनुसार, आने वाले दिनों में यह "थर्ड फ्रंट" न केवल स्थानीय निकाय चुनावों तक सीमित रहेगा, बल्कि 2027 के विधानसभा चुनावों में भी एक मजबूत वैकल्पिक राजनीतिक शक्ति के रूप में उभर सकता है। नागपुर, चंद्रपुर और भंडारा जैसे जिलों में यह नया गठबंधन पारंपरिक राजनीतिक समीकरणों को चुनौती देने की क्षमता रखता है।

महाराष्ट्र की धरती पर तीसरे मोर्चे का यह नया प्रयोग राज्य की राजनीति में एक दिलचस्प मोड़ लेकर आया है, जो आने वाले चुनावों में सत्ता के गणित को पूरी तरह बदल सकता है।

सूरत के युवक ने पाकिस्तान भेजे 10 करोड़ रुपये, गुजरात पुलिस ने किया साइबर क्राइम का बड़ा भंडाफोड़

(जीएनएस)। अहमदाबाद। गुजरात पुलिस ने सूरत से एक चौंकाने वाला साइबर अपराध उजागर किया है जिसने राज्य ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसियों को भी सतर्क कर दिया है। सूरत के रहने वाले एक युवक ने पाकिस्तान में स्थित एक क्रिप्टोकरेंसी वॉलेट में 10 करोड़ रुपये ट्रांसफर किए, जिसके बाद पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। आरोपी की पहचान चेतन गंगाणी के रूप में हुई है, जो कथित रूप से अंतरराष्ट्रीय साइबर अपराधियों के नेटवर्क से जुड़ा था।

गुजरात पुलिस की सीआईडी क्राइम ब्रांच ने चेतन को 3 नवंबर को सूरत के मोरबी इलाके से गिरफ्तार किया। जांच में सामने आया कि चेतन के पास 100 से अधिक फर्जी बैंक खाते (जिन्हें 'म्यूल अकाउंट' कहा जाता है) से संबंधित लेनदेन के सबूत मिले हैं। पुलिस के अनुसार, इन खातों का इस्तेमाल 200 करोड़ रुपये से ज्यादा की मनी लॉन्ड्रिंग में किया गया है। चेतन इन खातों के माध्यम से दुबई और पाकिस्तान में बैठे

साइबर अपराधियों की मदद कर रहा था। पुलिस सूत्रों के अनुसार, चेतन को इन ट्रांजैक्शनों के एवज में 0.10 प्रतिशत कमीशन दिया जाता था। उसने अपराधियों के कहने पर भारतीय बैंकों में जमा रकम को पहले क्रिप्टोकरेंसी में बदला, फिर उस डिजिटल करेंसी को पाकिस्तान स्थित वॉलेट में ट्रांसफर किया। यह प्रक्रिया कई चरणों में पूरी की जाती थी ताकि पैसों का वास्तविक स्रोत छिपाया जा सके।

जांच में खुलासा हुआ है कि चेतन का नेटवर्क देशभर में फैला था और वह डिजिटल अरेस्ट, फर्जी निवेश योजनाओं, और ऑनलाइन जॉब ऑफर्स जैसी जालसाजियों में सक्रिय गिरोहों के लिए धन संचालित करने का काम करता था। इन अपराधों से पीड़ित लोगों की रकम उन्हीं फर्जी खातों में पहुंचाई जाती थी, जिनका संचालन चेतन और उसके साथियों के माध्यम से होता था।

गुजरात के उपमुख्यमंत्री और गृह मंत्री हर्ष संघवी ने इस मामले को लेकर एक आधिकारिक बयान जारी किया है। उन्होंने कहा, "सीआईडी-क्राइम ने सीमा पार से संचालित एक बड़े साइबर नेटवर्क का भंडाफोड़ किया है। जांच में यह सामने आया है कि पाकिस्तान स्थित एक अकाउंट में 10 करोड़ रुपये ट्रांसफर किए गए, जबकि कई भारतीय खातों से कुल 25 करोड़ रुपये की राशि वहां पहुंचाई गई है।"

पुलिस की जांच में यह भी सामने आया है कि जिन 100 फर्जी खातों का इस्तेमाल किया गया था, वे 386 से अधिक साइबर अपराधों से जुड़े हुए हैं। इन अपराधों में लोगों को डिजिटल अरेस्ट का डर दिखाकर, नकली निवेश ऐप्स के जरिये ठगकर, और फर्जी नौकरियों का लालच देकर करोड़ों रुपये हड़पे गए थे। गुजरात पुलिस अब इस पूरे नेटवर्क के अंतरराष्ट्रीय संबंधों की गहराई से जांच कर रही है। सूत्रों के मुताबिक, कुछ ट्रांजैक्शन दुबई और सिंगापुर के सर्वरों से होकर गुजरे हैं। जांच एजेंसियां यह भी पता लगाने में जुटी हैं कि क्या इस पूरे नेटवर्क का कोई संबंध पाकिस्तान की खुफिया एजेंसियों या वहां के आतंकी वित्त पोषण चैनलों से है।

पुलिस के मुताबिक, यह मामला भारत में साइबर अपराध के नए और बेहद खतरनाक स्वरूप को उजागर करता है, जहां अब अपराधी सीमाओं के पार से डिजिटल वित्तीय नेटवर्क का दुरुपयोग कर रहे हैं। अधिकारियों का कहना है कि इस केस से मिली जानकारी भविष्य में ऐसे अपराधों को रोकने के लिए एक बड़ी कड़ी साबित होगी।

गुजरात पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों का कहना है कि आने वाले दिनों में इस मामले में और गिरफ्तारियाँ संभव हैं। उन्होंने आम जनता से अपील की है कि किसी भी तरह के संदिग्ध ऑनलाइन ट्रांजैक्शन, लिंक या निवेश योजनाओं से सावधान रहें और साइबर हेल्पलाइन 1930 पर तुरंत शिकायत दर्ज कराएँ।

यह मामला न केवल एक वित्तीय अपराध है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और डिजिटल अर्थव्यवस्था की पारदर्शिता के लिए एक बड़ा सबक भी है कि साइबर अपराध अब सीमाओं से परे जाकर कितना गहरा नेटवर्क बना चुका है।

मोहन भागवत बोले—मुसलमान और ईसाई भी आरएसएस में आ सकते हैं, बस भारत माता की संतान बनकर आएं

(जीएनएस)। नई दिल्ली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने रविवार को कहा कि संघ के द्वार सभी धर्मों के लोगों के लिए खुले हैं। चाहे वे मुसलमान हों या ईसाई, संघ में शामिल होने से किसी को रोका नहीं गया है—पर शर्त यह है कि वे अपनी धार्मिक पहचान से ऊपर उठकर भारत माता के पुत्र के रूप में आएं। भागवत ने कहा कि आरएसएस किसी धर्म, जाति या राजनीतिक दल का संगठन नहीं है, बल्कि यह देशहित और नीति के मार्ग पर चलने वाला सांस्कृतिक आंदोलन है। आरएसएस की स्थापना के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित विशेष कार्यक्रम में बोलते हुए भागवत ने कहा, "हम शाखा में आने वाले किसी व्यक्ति से उसका धर्म या जाति नहीं पूछते। हमारे लिए हर व्यक्ति भारत मां का पुत्र है। मुसलमान भी आते हैं, ईसाई भी आते हैं, और वे सब समान रूप से स्वागत योग्य हैं, बशर्ते वे इस भूमि को अपनी माता मानें।" उन्होंने स्पष्ट किया कि संघ का मूल उद्देश्य समाज में एकता और राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना विकसित करना है। भागवत ने कहा, "संघ किसी राजनीतिक पार्टी का नहीं, बल्कि नीतियों का समर्थक है। हम उन नीतियों के साथ खड़े होते हैं जो देश के हित में हैं, चाहे उन्हें कोई भी लागू करे।" कांग्रेस और कुछ

अन्य विपक्षी दलों द्वारा उठाए गए सवालों पर उन्होंने जवाब देते हुए कहा कि 1925 में जब संघ की स्थापना हुई थी, तब ब्रिटिश सरकार से संगठन का पंजीकरण करवाने की कोई अनिवार्यता नहीं थी। उन्होंने कहा, "आज कुछ लोग जानबूझकर भ्रम फैलाते हैं कि आरएसएस गुप्त संगठन था। यह गलत है। उस समय ऐसा कोई कानूनी प्रावधान ही नहीं था कि किसी सामाजिक संगठन को ब्रिटिश सरकार से पंजीकरण कराना पड़े।"

मोहन भागवत ने अपने संबोधन के अंत में कहा कि आने वाले शताब्दी वर्ष में आरएसएस का उद्देश्य भारत को एक सशक्त, आत्मनिर्भर और समरस राष्ट्र बनाना है, जहां व्यक्ति की पहचान उसके धर्म से नहीं, बल्कि उसकी देशभक्ति और कर्म से होगी

। उन्होंने कहा, "भारत माता की संतान बनने की भावना ही संघ का असली धर्म है—और जो यह स्वीकार करता है, उसका स्वागत सदैव खुला है।"